मानव मन्दिर

जनवरी-फरवरी, 2020 (वर्ष-47 अंक 01-02)

विश्व में मानव-मात्र के सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक कल्याण और विकास की सेवा में संलग्न पत्रिका

संस्थापक :

परमसन्त परमदयाल पं फ़कीर चन्द जी महाराज

दयाल कमल जी महाराज
09418370397

प्रबन्धक सम्पादक
आचार्य ब्रह्मशंकर जिम्पा
09877490267

प्रकाशक
श्री राणा रणबीर सिंह
09463115977

अनुक्रमणिका

1. आरती- 04
2. नव वर्ष सन्देश - 05, 08
3. हजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महारज
   सुख की खोज बाहर नहीं... - 11
4. हजूर परमदयाल जी महाराज:-
   सतज्ञान दाता-20
5. हजूर मानवदयाल जी महाराज:-
   मानव जीवन का उद्देश्य - 48
6. सत्संग दयाल कमज जी महाराज- 71
7. दानी सज्जनों की सूची - 88

संपादक एवं ट्रस्ट अपनी पूर्व सन्त-परम्परा के विचारों के प्रति समर्पित है।
शेष आचार्यों के विचार उनके व्यक्तिगत हैं, उनसे सहमति अनिवार्य नहीं।

Faqir Library Charitable Trust (Regd.)
Manavta Mandir, Manavta Mandir Road,
Hoshiarpur-146001 (Pb) Ph: 01882 243154
web: www.manavtamandirhsp.com
facebook.com/manavtamandirhsp

मूल्य : 20/-

आरती

राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी॥
अलख अगम और अनामी॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी॥
परम सन्त का रूप धरा, जीवों पर उपकार किया॥
सीधा सच्चा मार्ग दिया, आये धुर पद धामी॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी॥
बन कर आये परम फकीर, हरने सब जीवों की पीर॥
परम दयालु दानी वीर, नाम दान के दानी॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी॥
राम भी हो और कृष्ण भी तुम॥
तुम महावीर और बुद्ध गौतम॥
अक्षर ब्रह्म और पुरुषोत्तम, सब नामों में अनामी॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी॥
मानवता का किया प्रचार, निज अनुभव का दे दिया सार॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी॥
दाता दयाल के प्यारे तुम, मानव के रखवारे तुम॥
निर्गुण और सगुण भी तुम, सब के अन्तर्यामी॥
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी॥

राधास्वामी! **राधास्वामी** **राधास्वामी**

नववर्ष 2020 आ रहा है। परमदयाल जी महाराज ने सच्चे दिल से नव वर्ष के आगमन पर – **राधास्वामी!** आज नया साल है। आयु बीत गई घर को खोजते-खोजते। बहुत अभ्यास किया, बहुत कुछ देखा और सुना। आगे क्या है? वहाँ जाना चाहता हूँ। इसके आगे मेरी अपनी ज़ात है और वही घट में आने से पहले थी। पता नहीं उसमें कब गुम हो जाऊँगा। घट बहुत देख लिया, अनुभव किया, पंथ देखा, बाल की खाल निकाली। आगे क्या होगा? यह मालिक जानता है। हज़ूर महाराज जी ने भी लिखा है:

आगे बाट चलो नहीं मेरी, राधास्वामी करो निबेड़ा।

मैं भी यही करता हूँ कि घर का पता लग गया। **मेरा घर या मेरा आद क्या है? अनामी धाम में- जहाँ न मैं है और न तू है, न गुरु है और न चेला है।** आज नया साल है। दोस्तो! मेरे साहित्य को पढ़ने वालो!! मैं सोचता हूँ कि मैं किसी के लिए क्या कर सकता हूँ? हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने जीवों के कल्याण और निबल-अबल-अज्ञानी लोगों की सहायता करने की आज्ञा दी थी। इस घाट का सफ़र करते हुए जो कुछ मेरी समझ में आया वह मैंने कहा; मगर मुझे किसी बात का दावा नहीं है। हज़ूर महाराज जी ने भी यही फरमाया है कि आगे पता नहीं क्या हो। राधास्वामी दयाल जी निबेड़ा करेंगे। **लेकिन मैं तो यह समझता हूँ कि हमारी आदि अवस्था वह है जहाँ न पिंड रहे, न अंड रहे, न ब्रह्मांड रहे, न प्रकाश रहे और न शब्द रहे। क्या रहे? खामोशी। इस अनुभव के आधार पर मैंने यह समझा है कि जीवन क्या है :**

लब खुले और बन्द हुए यह राज़े ज़िन्दगानी है।

उसकी मौज से प्रकृति के अनुसार केन्द्र बन जाते हैं; कहीं इन्सान है, कहीं हैवान है, कहीं परिन्दे हैं, कहीं पृथ्वी है, कहीं चाँद है और कहीं

सूर्य है। वह खेल खिलाता है। फिर समय आता है और वह केन्द्र टूट जाता है। उस अवस्था की मुझे तलाश है। तलाश करते-करते बुढ़ापा आ गया। मुझे जो कर्त्तव्य मिला है, आज्ञावश अपना अनुभव कहता रहता हूँ। अब कर्म का चक्कर मुझे बाहर मिले जा रहा है। उसकी इच्छा!

नया साल सबको मुबारिक हो। आपका घट अच्छा रहे। खाने को रोटी मिले, पहनने को कपड़ा मिले और रहने को मकान मिले और जीवन आराम से व्यतीत हो! यह सच्चे दिल से प्रार्थना है। आप लोग मुझे गुरु मानते हैं और प्रेम करते हैं। जो अनुभव किया वह कहता हुआ आ रहा हूँ। अब अन्तिम मंज़िल है। प्रतीक्षा करता हूँ कि कब खेल समाप्त हो। फिर न तू रहे, न मैं रहे, न पंथ रहे, न पंथाई रहे, न ईश्वर रहे और न परमेश्वर रहे:-

तू मबास असला कमाल ई अस्तो बस।
तू दरोगुम शिव विसाल ई अस्तो बस॥

आज का यही संदेश है। नया साल सबको मुबारिक हो!

जो दशा हज़ूर महाराज की थी, वही मेरी है। बहुत अभ्यास किया और बहुत दौड़ा। आगे क्या है? मैं समझ तो गया; मगर अभी तक मुझसे वहाँ ठहरा नहीं जाता।

सबको राधास्वामी, फ़कीर!

परमदयाल जी महाराज की अनुकम्पा से उनका प्रकाश पर्व दयाल कमल जी महाराज तथा आचार्य कुलदीप शर्मा जी के सार-गर्भित सत्संग से सत्संगियों ने असीम लाभ एवं कृपा प्राप्त की। सत्संगियों को इस वायदे के साथ विदा किया कि वैसाखी के शुभ अवसर पर बड़ी संख्या में पधारकर हमें सेवा का अवसर प्रदान करें।

इस बार शिवदेव एस.एस.के. हाई स्कूल के विद्यार्थियों ने अपने

सालाना जलसे में बड़ा ही मनोहारी एवं मनभावन कार्यक्रम प्रस्तुत किया। जिसमें उन्होंने महाराज की शिक्षाओं को, जल बचाओ अभियान (save water) स्वच्छता अभियान और देश भक्ति से ओत-प्रोत कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इसके लिए मैं तहेदिल से स्कूल के मैनेजर, प्रिंसीपल, सभी अध्यापिकाओं और छात्र-छात्राओं का धन्यवाद करता हूँ। इस अवसर पर डॉ. के.एन.आहुआ और डॉ. मनमोहन सिंह ने अपने सहायक अमरधीर के साथ हमारा अनुकरणीय सहयोग दिया। इव अवसर पर मुख्यातिथि डा. गुरदीप शर्मा, प्रिंसीपल शाम सुन्दर शर्मा, प्रिंसीपल डी.के. शर्मा का भी तहे दिल से आभार प्रकट करता हूँ। इन उच्चकोटि के शिक्षाविदों का हमारे परिसर में पहुँचना बड़े ही सौभाग्य की बात है।

दयाल कमल जी महाराज, आचार्य कुलदीप शर्मा, आचार्य अरविंद पाराशर, आचार्य पं. ब्रह्मशंकर जिम्पा की तरफ से आप सभी सत्संगियों का नववर्ष मंगलमय हो और परमदयाल पं. फकीरचन्द जी महाराज की कृपा एवं अनुकम्पा आप पर बरसती रहे।

ट्रस्ट प्रधान आचार्य पं. ब्रह्म शंकर जिम्पा जी और सभी ट्रस्टियों की ओर से फ़कीर लाईब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट और मानवता मंदिर परिवार की तरफ से नव वर्ष की बहुत-बहुत बधाई और शुभ कामनाएँ।

आपका दास

सचिव

राणा रणवीर सिंह

मानवता मन्दिर होशियारपुर

नव वर्ष के आगमन पर

वन्दना बेटी ने मुझे नव वर्ष के आगमन पर सत्संगियों के लिए संदेश लिखने की प्रार्थना की, सोचता हूँ क्या लिखूँ? हमारे परमदयाल जी महाराज ने अपने निज़ी जीवन के उदाहरण दे-देकर मानव जाति को कितना ज्ञान प्रदान किया, मगर देखने में आता है कि यह दुनिया केवल पत्थर की मूर्ति है, चाहे इसे ज्ञान के सागर में भी डूबो दो यह जैसी थी वैसी ही रहेगी।

फिर भी लिखता हूँ ऐ, इन्सान तू इन्सान के रूप में पैदा हुआ है और इन्सान बन कर जीवन गुज़ार। मैं यह नहीं कहता कि तू किसी धर्म का पैरोकार ना बन, तू सच बन कर उस धर्म का पालन कर और दूसरों का विरोध अथवा बुराई ना कर। जो भी धर्म है वह सिद्धान्तों पर आधारित है, उनका पालन करो और जीवन को क्रियात्मक बनाओ। पूजा, पाठ, यात्रा, दान आदि करो मानसिक सुख मिलेगा, मगर आप आवागवन और सुख-दुख से छुटकारा नहीं पा सकते।

सतगुरु परमदयाल जी महाराज की संगत में रहकर, उनके आदेशों का पालन करके जो मैंने अनुभव किया वह थोड़ा लिखता हूँ- शायद नव वर्ष में आपका जीवन बदल जाए।

यदि आप नौजवान हैं अपने चरित्र पर पूरा कन्ट्रोल रखो। खूब शिक्षा ग्रहण करो, ख्याल ऊँचे रखो, ज़िन्दगी में कुछ बनने का संकल्प बनाओ सफलता आप के पाँव चूमेगी। इस उम्र में किसी पूजा-पाठ की जरूरत नहीं बल्कि Hard work is worship सख्त मेहनत ही पूजा है।

अगर आप परिवार वाले हो, घरों में शान्ति रखो। माफ करने की आदत डालो। कड़वा वचन सहन करो, प्यार दो और प्यार लो, मन में

कुढ़ना बन्द करो वरना किसी बीमारी के शिकार हो जाओगे। भोजन सादा और सात्विक खाओ, पति पत्नी की और पत्नी पति की इज्जत करे। अगर लड़की की शादी कर दी है तो उसके वैवाहिक जीवन में दखल न दो वरना उसका गृहस्थ जीवन बिगड़ जाएगा। अपनी बहू को बहू नहीं बल्कि बेटी समझकर उससे बेटियों जैसा व्यवहार करो, आप सुखी रहोगे।

बच्चों को नेक विचार दो। उनके चरित्र पर नजर रखो, जमाना बहुत तेजी से नरक की ओर जा रहा है। अपनी आमदनी से अधिक खर्च कभी मत करना और न अपनी शान बनाने के लिए कर्ज़ लेना वरना नींद चली जाएगी और बीमारी के शिकार हो जाओगे।

याद रखो इस संसार में कर्म ही प्रधान है। जैसा कर्म करोगे वैसा ही फल मिलेगा, वह किसी दान-पुण्य से नहीं मिलेगा। अपनी नीयत को साफ रखो और अपने स्वार्थ के लिए किसी को धोखा मत दो। स्वार्थ ही मन की विचलिता है। स्वार्थ अधीन आदमी बुरे कर्म करता है अंत में रोता है। नेक बनो, हो सके तो दूसरों का भला करो और भला माँगो, आप का भी भला होगा।

सवेरे शाम नाम, दिन को खूब काम, रात को आराम।

याद रखना हक-हलाल की कमाई से दान करना बहुत कठिन है।

हमारी माताएँ वास्तव में देश की निर्माता हैं। नेक, आज्ञाकारी, योग्य औलाद को जन्म देना उन्हीं का अधिकार है। हमारा इतिहास इस बात का प्रमाण है। मेरी करवद्ध प्रार्थना है कि माताएँ प्रण लें कि दो से अधिक बेटा और बेटी पैदा नहीं करेंगी। छोटा परिवार सुखी परिवार। थोड़े बच्चों को आप अच्छे से पाल-पोस सकते हो और शिक्षा भी दिलवा कर काबिल बना सकते हो। इससे अधिक संदेश क्या हो सकता है।

दो शब्द बुर्जुगों की सेवा में- **जो बीत गया सो बीत गया, अब**

पछताय होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत। बाकी समय की कद्र करो जमाना बदल गया है। बच्चों के कारोबार में तब तक कोई दखल मत दो जब तक वो आप से सलाह न माँगे वरना वो बुरा मानेंगें। सहनशील बनो बहुओं को अपनी बेटियाँ समझकर उनका घर के कामकाज में सहायता किया करो। उनका कहना मानने में सुख है। कभी खाली मत बैठो, कुछ न कुछ घर का काम जरूर करो और अगर पैन्शन मिलती है तो बच्चों की अधिक सहायता भी करो। सत्संग में जाया करो ताकि अगला जीवन भी सुधर जाए। अगर सौभाग्य से नाम प्राप्त हुआ है तो सिमरन ध्यान और भजन में नागा नहीं आने दो। आपका जीवन सुख से गुजर जाएगा।

और क्या लिखूँ आपके भले के लिए जो ख्याल आए आप की सेवा में निस्वार्थ भाव से लिख दिए- आप मानो या ना मानो हम तो भला ही चाहेंगे। **'हम नहीं चंगे, बुरा नहीं कोए'** सुखी रहो इन्सानियत अपनाओ रूहानियत पर पहुँच जाओगे। इसीलिए परमदयाल जी महाराज ने 'मानवता मन्दिर' इस संस्था का नाम रखा और मानवता का झँडा फहराया है। आप को सेहत मिले, खाने को भोजन, पहनने को वस्त्र, रहने को मकान, नेक जीवन साथी और नेक औलाद मिले मन को शान्ति अपने आप मिल जायेगी

सबको राधास्वामी

दयाल कमल जी महाराज

मानवता मन्दिर, होशियारपुर

सुख की खोज बाहर नहीं परन्तु अपने अन्तर में है

हज़ूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज

जिस असली आध्यात्मिक भण्डार का वर्णन मैंने कई बार किया है, वह ही सुरत का इष्ट पद है। वही सन्तों का विश्राम पद है। वहाँ पर दु:ख नाममात्र का भी नहीं है। यदि वास्तव में बात ऐसी है, तो इससे यह परिणाम निकलता है कि वह मन और माया के मण्डल से परे होगा। वहाँ मन और माया की मिलौनी न होती होगी, किन्तु दु:ख तो वहाँ ही होता है जहाँ मन और माया की मिलौनी होती है। यदि सुरत सम्बन्ध तोड़कर, उस निर्मल स्थान में पहुंच जाये, जो आत्मिक है और जो केवल आनन्द है तो फिर उसे दु:ख नहीं होगा, वह सदा के लिए सुखी हो जायेगी। नीचे मण्डलों में वह (सुरत) माया और मन के प्रभावों से प्रभावित रहती है एक ओर माया है, मादा है दूसरी ओर आत्मा है बीच में है मन। मन एक प्रकार का पुल है, जो आत्मा और माया के बीच में रोक है। पुल के पार चले जाओ, आत्मा के लोक में पहुंच जाओगे।

क्या यह लोक हमसे दूर है? हाँ, है भी और नहीं भी। वह ब्राह्मण्ड से भी परे है, क्योंकि ब्रह्माण्ड स्वयं मन और माया की

मिलौनी से प्रकट हुआ है। इस दृष्टि से यदि हम ब्रह्माण्ड को फाँद कर, उसके परे जाना चाहेंगे तो यह चढ़ाई अत्यन्त कठिन होगी। कौन जाने मिल भी सकेगा या नहीं। मगर सन्तों ने कहा है कि वह तुम्हारे अन्दर भी है और बाहर भी। यदि आप अपने अन्दर रास्ता खोज करके चढ़ाई करोगे, तो उस पर पहुँच जाओगे। फिर भी यह काम बहुत आसान नहीं है आपके सामने हर प्रकार की रुकावटें आयेंगी, बाधाएँ आयेंगी। आपको धैर्य तथा सावधानी से काम लेना होगा। तभी ही आपकी विजय होगी और इस विजय के पश्चात् आप आत्मिक लोक में पहुँच सकोगे। अभी आप इस समय रहते हो, वह मन माया का राज्य है, उसकी सीमा के बाद ही आत्मा की शुद्ध सीमा आती है। वह आध्यात्मिक राज्य तुम्हारे अपने ही अन्दर है और उसकी खोज अपने ही अन्दर में करनी चाहिए।

सन्तों का कहना है कि हमारा शरीर ब्रह्माण्ड का छोटा नमूना है। ब्रह्माण्ड बड़ा लोक है तथा पिण्ड छोटा, जिसमें केवल ब्रह्माण्ड के मन और माया के मण्डलों के प्रतिबिम्बित रूप ही नहीं है, किन्तु उसमें सुरत के भण्डार का तत्त्व भी है। जिस तरह कोई लेखक किसी बड़े ग्रन्थ के अर्थ और घटनाओं को लेकर, उनको सूक्ष्मरूप में एक छोटी सी पुस्तक में लिख देता है, वैसे ही ब्रह्माण्ड एक बड़ा ग्रन्थ है और पिण्ड उसमें से निकाली एक छोटी पुस्तक है। समस्त ग्रह, तारागण, जो ब्रह्माण्ड में हैं वे पिण्ड में भी है। जो व्यक्ति ब्रह्माण्ड का अध्ययन करना चाहें वह अपने ही शरीर का अध्ययन कर लें।

ब्रह्माण्ड के महत्त्व और उसकी समस्त शक्ति का भेद अपने आप ही मिल जायेगा। रचना की कुल हालतें, स्थूल, सूक्ष्म और कारण सब हमारे शरीर में भी पाई जाती हैं, स्थावर-जगत जीवन तक के सब नक्शे इसमें हैं। मनुष्य यह सब कुछ तो है ही, परन्तु उससे कुछ अधिक भी है। मनुष्य में उच्च कोटि का अध्यात्म है और अपनी इस विशेषता के कारण वह देवताओं, फरिश्तों और दिव्य वस्तुओं से भी बढ़कर है। संसार का कोई धर्म या सम्प्रदाय ऐसा नहीं, जो मनुष्य योनि को सबसे श्रेष्ठ न मानता हो। जब तक मनुष्य वासनाओं के बन्धन में जकड़ा रहता है, तब तक वह दुर्बल दिखाई देता है, मगर जहाँ उसकी दृष्टि ऊँची गई वह अपनी महत्ता को समझने लगता है, वह एक भिन्न जीव हो जाता है। उसकी उन्नति के सभी स्तर सुषुप्ति की दशा में दबे पड़े रहते हैं। परन्तु जब वह अपने आपको पहिचान लेता है तो दबी हुई अवस्थाएँ उभर खड़ी होती हैं और वह कुछ का कुछ हो जाता है।

स्थावर जगत् उसकी सुषुप्ति अवस्था के समान है। स्थावर जीवन स्थूल जड़ जीवन है। इससे आप यह न समझना कि जड़पना निर्जीव अस्तित्व है। वह भी जीवित जीव है। हाँ उसका जीवन एक प्रकार का घोर सुषुप्ति का जीवन है। वह बढ़ते-घटते, बनते-बिगड़ते, खाते-पीते रहते हैं। सीखने, अपने में मिलाने और पैबन्द कर लेने की शक्ति उनमें भी है। जहाँ यह सब कानून काम करते हैं, वहाँ जीवन के अभाव का कैसे अनुभव हो सकता है ? यहाँ एक कण भी

ऐसा नहीं है, जो जीवन रहित हो। पुरुष और प्रकृति का खेल कण-कण में है, इसके होने से कैसे इन्कार किया जा सकता है। इसमें आध्यात्मिक कम है।

वनस्पति वर्ग के सुषुप्ति और निद्रा दो दशाएँ हैं। वृक्षों में जो दशा है, वह विशेष तरह की है, जैसी कि स्वप्न में घूमने-फिरने वाले मनुष्यों में देखी जाती है। मनुष्य नींद में होता है, मगर चलता-फिरता है। आँख के बन्द होते हुए भी काम करता है। वृक्ष भी ऐसा करते हैं। इन दोनों दशाओं में रहते हुए पौधे आदि उगते, बढ़ते तथा फल-फूल लाते हैं। स्थूल पदार्थ में प्रत्यक्ष बोध-शक्ति दिखाई नहीं देती मगर वृक्षों में विद्यमान है। कुछ पौधे तो ऐसे हैं कि वह कभी मनुष्य की तरह अपनी चैतन्य बुद्धि का दृश्य दिखाते हैं। इसमें लाजवन्ती का पौधा ऐसा है जो मनुष्य या पशु की छाया से घबरा कर अपने पत्ते और टहनियों को समेट लेता है और छाया के दूर होते ही फिर अपनी असली दशा में आ जाता है। किसी ने छुआ नहीं कि वह मुर्दे का रूप बन जाता है। ऐसे वृक्ष जिनमें बोध करने वाली शक्ति दिखाई देती है एक-दो नही, किन्तु अनेकों हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो अपने चुम्बकीय प्रभाव से छोटे-छोटे पक्षियों को अपनी ओर खींचकर, उनके रक्त व मांस को चूस कर तने में मिला लेते हैं और ठठरी को अलग फैंक देते हैं। उनको भी सुख-दुःख का भान होता है, चाहे वह लय अवस्था हमारी समझ में उच्च कोटि की न हो। कमल का फूल सूर्य डूबते ही अपनी पंखुड़ियाँ समेट लेता है। कुमुदिनी की चन्द्रमा के डूबने पर

यही दशा होती हैं। एक धूप में और एक चाँदनी में खुश रहती है। कुछ वृक्ष ऐसे हैं कि यदि तुम उन पर थूक दो तो वह जल जाते हैं। इससे प्रकट होता है कि वृक्ष निर्जीव नहीं हैं। वह भी रोगी होते हैं और उनको भी दवाई की ज़रूरत रहती है।

अब पशुओं की दशा को देखो। पशुओं में तीन दशाएँ होती हैं-

1. जाग्रत
2. स्वप्न तथा
3. सुषुप्ति।

जब वह जागते हैं, उनकी आँखें खुलती हैं और वे काम करते हैं। जब वे सोते हैं उनकी आँखें बन्द हो जाती हैं।

मनुष्य सम्पूर्ण जीवों में श्रेष्ठ है। इन तीनों अवस्थाओं के साथ-साथ उनमें एक और विशेष प्रकार की दिव्य अन्त:करण की अवस्था सुषुप्ति में पड़ी रहती है, जो उन्नत किये जाने पर आत्मिक मण्डल में उसको सफल होने का अवसर देती है। वैसे भी मनुष्य में विद्वत्ता, बुद्धिमत्ता और बोधनशक्तियाँ समस्त जीवों से अधिक विकसित होती हैं।

पृथ्वी और आकाश के जीवन की जितनी विशेषताएँ हैं वे सबकी सब मनुष्य में विद्यमान् हैं। कुछ तत्त्व मनुष्य के स्थूल और सूक्ष्मरूप में मौजूद हैं। जीवन के उभार में सब श्रेणियाँ अद्‌भुत रूप से

काम करती हैं। मनुष्य पशु भी हैं और वृक्षों से भी समता रखता है। कोई उसे उल्टा वृक्ष भी कहते हैं, जिसकी जड़ ऊपर की ओर है तथा पत्ते और टहनियाँ नीचे की ओर।

समस्त धार्मिक ग्रन्थों में लिखा है कि मनुष्य ईश्वर के रूप में बनाया गया है। जो-जो गुण ईश्वर में हैं सबके सब प्रतिबिम्बित और प्रकाशवान रूप में मनुष्य में भी हैं। सुख का असली भण्डार भी मनुष्य के अपने अन्तर में ही है। उस सुख के भण्डार का पता लगाना तथा उसे प्राप्त करना मनुष्य का ही काम है।

सर्वसाधारण का धर्म व साधुओं का विशेष धर्म

विकसित अर्थों में धर्म मनुष्य के लिए एक ऐसी बरकत है, जिसकी किसी और वस्तु से तुलना नहीं की जा सकती। इसके मूल्य का लगाना मनुष्य की शक्ति के बाहर है। धर्म का अनुकरण और उसके उद्‌देश्य की पूर्ति करने का प्रयत्न एक बड़ा पुरस्कार है, जिसके द्वारा जो सन्तुष्टि तथा आत्मिक आनन्द मिलता है, उसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता। आध्यात्मिक राज्य में प्रवेश करना तथा उसमें धैर्य से जमे रहना केवल धर्म की सहायता से ही सम्भव है। धर्म हमें ईश्वर की खोज अपने अन्तर में ही करना सिखाता है।

साधारणतया मनुष्य यह मानता है कि धर्म की प्राप्ति का सम्बन्ध विश्वास पर ही निर्भर है, जिसमें तर्क तथा वाद-विवाद का

कोई स्थान ही नहीं। सन्तमत में अन्धविश्वास पर निर्भर होने की शिक्षा नहीं दी जाती। केवल आँख बन्द करके किसी विशेष प्रकार का विश्वासी होकर रहना बहुत ही घृणात्मक विचार है, जिससे मनुष्य की बुद्धि स्वाभाविक रूप से दूर भागती है। धर्म का विषय भी स्वाध्याय और खोज चाहता है।

इसमें सन्देह नहीं कि पृथ्वी और आकाश में ऐसे-ऐसे रहस्य हैं जिनका हल करने में मनुष्य की बौद्धिक शक्ति के बाहर है।

हिन्दुओं को जिस धर्म की शिक्षा प्रारम्भ से दी गई थी, उसके तीन रूप— कर्म, उपासना और ज्ञान हैं। कर्म-काण्ड में रस्म-रिवाज, भिन्न-भिन्न प्रकार के धार्मिक बन्धन, शरीर का पालन-पोषण और शिक्षा आदि सम्मिलित हैं। धर्म की शिक्षा कर्मकाण्ड से आरम्भ होती है और शरीर का पालन-पोषण होते-होते मनुष्य का मन धीरे-धीरे स्वयं मानसिक क्षेत्र की ओर झुकने लगता है। मनुष्य को सदा यह उपदेश दिया जाता है, कभी भी अपनी आदतों का दास न बने और धर्म का उद्देश्य सदा अपने सामने रखे। कर्म प्रारम्भिक सीढ़ी है, जिसको केवल उसी समय छोड़ना चाहिए जब मनुष्य को उससे ऊँची सीढ़ी पर चढ़ने का अवसर हाथ में आ जाये।

कर्मकाण्ड के बाद उपासना काण्ड आता है, जो ध्यान और

अभ्यास है जो मनुष्य को परमात्मा के साथ सम्बन्ध जोड़ने योग्य बनाता है।

ज्ञान का अभिप्राय आन्तरिक ज्ञान है, जो अधिकतर बुद्धि की उन्नति उसके उभार और उस पर अधिकार पाने पर निर्भर है। बुद्धि एक सूक्ष्म तत्त्व है, जो मन तत्त्व से भिन्न है और आत्मा के बहुत निकट है। बुद्धि के ऊपर तथा आत्मा के नीचे रहती है और उस तक चढ़ जाने से ही आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश करना सम्भव हो सकता है। हम इसको सात्विक प्रकाश की अवस्था कह सकते हैं। आत्मिक प्रकाश की अवस्था इस अवस्था से कोसों दूर हैं। मार्ग में अभी बहुत सी श्रेणियाँ बाकी हैं, जिनके बीच से होकर मार्ग जाता है।

दुर्भाग्य से इन सब शब्दों की असली समझ कठिनता से आती है और इष्टपद प्राप्त करने में असफलता होती है। इन तीन प्रकार की प्राप्ति जीवन के भिन्न-भिन्न कर्त्तव्यों का पालन करते हुए होती रहती है। शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियों की उन्नति जीवन के दैनिक संघर्ष, आस-पास के वातावरण और घटनाओं के साथ मुठभेड़ करने से सम्भव है। परन्तु यह भूलकर भी नहीं समझना चाहिए कि शारीरिक, आत्मिक तथा मानसिक काम के साथ-साथ किसी भी दशा में आत्मिक कमाई की भी पूर्ति सम्भव है। न ऐसा कभी पहिले हुआ है, न कभी आगे होगा।

निजस्वरूप के ज्ञान के बिना आत्मा का आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश करना सम्भव नहीं है।

सन्तों के धर्म की यह विशेषता है कि वह मनुष्य की सारी श्रेणियों को दृष्टि में रखकर, एक विशेष प्रकार के योग की शिक्षा देता है, जिसकी सहायता से अभ्यासी को आत्म-विश्वास प्राप्त हो जाता है। उसमें कर्म भी है, उपासना भी है और ज्ञान भी है। वह सूक्ष्म अंग को स्वीकार करते हुए एक सरल क्रिया से साधन और अभ्यास की विधि बतलाता है, जिससे शीघ्र से शीघ्र आध्यात्मिक उन्नति होती है।

सतज्ञान दाता

परमसन्त

हज़ूर परम दयाल पं. फ़कीर चन्द जी महाराज

सालवान स्कूल, नई दिल्ली- 19-10-1969

ऐ भारत वासियो! मैं यह सत्संग का काम क्यों करता हूँ। मुझे सात वर्ष की आयु से उस मालिक से मिलने की प्रबल इच्छा थी। मौज मुझे संतों के दरबार में ले गई, जो यह कहते हैं कि उनके सिवाय कोई भी जीव को पार नहीं लगा सकता। मैंने उस समय यह प्रण किया था कि मैं सच्चाई से इस रास्ते पर चलूँगा और जो कुछ अनुभव होगा, वह मैं बता जाऊँगा।

मैं अपना कर्म भोग भोगता हूँ। हर साल यहाँ देहली आता रहता हूँ। गतवर्ष भी आया था। सालवान साहब ने सत्संग के लिये स्थान मुफ्त में दे दिया था। दुनिया मेरे जैसे स्पष्ट वक्ता को पैसा नहीं देती किन्तु उनको देती है जो दुनिया को धोखा देते हैं। मैं सोचता हूँ कि देहली वालों ने इस बार भी सत्संगियों के लिए भोजन का प्रबन्ध कर रखा है मगर इसका खर्च कौन देगा। मालिक ने सालवान साहब के मस्तिष्क को हिलाया है। उन्होंने 1100/- रु. का चैक काट कर दे दिया है। कोकाकोला के मालिकों ने भी 500/- रु. दिया है। कुदरत ने

यहाँ के खर्च का प्रबन्ध कर दिया है।

मैं आप लोगों को वह बातें बताना चाहता हूँ जो मैंने अपने जीवन में अनुभव की है। सन्तो की वाणी यदि मेरे अनुभव के साथ न मिलती तो मैं अवश्य इसके विरुद्ध कह जाता। मैंने इस अवसर पर संत कृपाल सिंह जी महाराज, पीरेमुंगा साहब, प्रिंसीपल दिलाराम साहब को यहाँ आने को निमंत्रित किया है। वह इसलिये नहीं कि मेरी हाँ में हाँ मिलावें किन्तु इसलिये कि मुझे पता लग सके कि मेरा अनुभव कहीं गलत तो नहीं है। यह दावा करना कि जो कुछ मैंने समझा है वही ठीक है, उचित नहीं है। मैं इन महात्माओं को पूरा अधिकार देता हूँ कि अगर मैं गलत कहता हूँ तो वह स्पष्ट रूप से कह दें कि मैं गलत रास्ते पर चल रहा हूँ ताकि मैं सँभल जाऊँ और सुधर जाऊँ। फिर यह शब्द पढ़ा गया–

बन्दनम् सत ज्ञान दाता, बन्दनम् सत ज्ञान मय।
बन्दनम् निर्वाण राता, बन्दनम् निर्वाण मय॥
भक्ति मुक्ति योग युक्ति, आपके आधीन सब।
आप ही हैं सिन्धु सद्गति, जीव-जन्तु मीन सब॥
आप गुरु सतगुरु दया, और प्रेम के भंडार हैं।
आप करता धरता हैं, करतार जगदाधार हैं॥
ऋद्धि सिद्धि शक्ति नौनिध, हैं चरन में आपके।
बच गया भव दुख से, जो आया शरण में आपके॥

भक्ति दीजे नाम की, जो सतनाम में विश्राम दे॥
राधास्वामी अपना कीजे, राधास्वामी धाम दे॥

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि ऐ फकीरचन्द! तू सच बता कि क्या तुझे निर्वाण मिल गया। मुझे पता नहीं है। दाता दयाल के निर्वाण पद या कबीर साहब के सत का क्या अभिप्राय है। मैं इस मार्ग पर चला हूँ। चलते चलते एक ऐसी अवस्था आ जाती है। जहां यह संसार, यह रचना, यह देह, मन आत्मा, प्रकाश और शब्द ही लोप हो जाते है। मेरे जीवन की खोज का परिणाम मुझे इस अवस्था तक ले गया है कि यह सब लोप हो जाते हैं। मगर मेरा 'मैं पना' मौजूद रहता है। उस समय मैं अपने निज स्वरूप में लय हुआ होता हूं। यह मेरे प्रालब्ध कर्मों का परिणाम है या इसे मौज मालिक समझो। संसार वालों को इस अवस्था की आवश्यकता नहीं है जिसका मैंने वर्णन किया है। संसारियों को तो केवल जीवित रहने और सुख से जीवन व्यतीत करने की आवश्यकता है। इसको प्राप्त करने के लिये मैं इन सत्संगों में सर्व साधारण को ठीक मार्ग या तरीका बताना चाहता हूँ।

आजकल अधिकतर लोग इस संसार में दुखी दिखाई पड़ते हैं। कोई बिरला मालिक का लाल ही सुखी होगा। आज सुबह दो व्यक्ति मेरे पास आये। वह कहने लगे कि बाबा जी आपने बड़ी दया कर दी है जो हमारी इच्छा पूरी हो गई है और हम सुखी हैं। यह संसार दु:ख की खान है। मैं आप लोगों को इस दुनिया में सुख प्राप्त करने का सरल तरीका बताता हूँ जो मेरे अनुभव के आधार पर ठीक है।

पहिली बात यह है कि हम गृहस्थी हैं। प्राय: दुखी होते रहते हैं। किसी के सन्तान नहीं है, वह दुखी है। जिसके सन्तान है वह भी दुखी हैं । यहाँ निर्धन लोग भी दुखी हैं। साथ ही धनी लोग भी दुखी हैं। कोई बीमार है, कोई मुकद्दमा बाजी में फँसा हुआ है। किसी में कोई कमी है किसी में कोई। हर एक को अलग अलग तरह के दु:ख हैं।

आजकल मनुष्य बड़ा स्वार्थी है। वह ऐसा क्यों है ? क्योंकि जिस भगवान ने इस संसार को बनाया है उसने अपनी इच्छावश इसे बनाया है। हमारे साथ क्या बीतती है उसे इसकी परवाह कब होती है। तुम अपने स्वाद और सुख के लिये और अपनी खुशी के लिये संतान पैदा करते हो। उन्हें पैदा करते समय क्या तुमको ख्याल आता है कि वह कोढ़ी होंगे, टी.बी. से मरेंगे या कैंसर से मरेंगे या किसी दुर्घटना के शिकार होंगे। मैं तुमको यह विचित्र बात कह रहा हूँ, अपनी आंखें खोलो! तुम सन्तान की इच्छा करते हो! मैंने भी की है मगर विवश होकर कि जब मेरे कोई लड़का नहीं था। मेरी स्त्री मेरे पीछे पड़ी रहती थी कि लड़का हो।

इस संसार में दो रास्ते हैं- एक संसार में सुखी रहने का और दूसरा संसार से पार होने का।

राधास्वामी मत या सन्तों का मत मानवधर्म की एक शाख है, जो इस भवसागर से निकलने का मार्ग बताता है। एक प्रवृत्ति मार्ग है और दूसरा निवृत्ति मार्ग है। केवल सच्चा ज्ञान ही मनुष्य को भवसागर

से पार ले जा सकता है। यहां पर गुरु के कई रूप हैं। कोई डाक्टरी लाइन का गुरु है कोई इंजीनियरिंग लाईन का गुरु है। इसी प्रकार कोई अध्यात्म का गुरु है, कोई परलोक का गुरु है और कोई लोक का गुरु है, मगर पूर्ण गुरु वह है जो प्रवृति और निवृति मार्ग का ज्ञान देने वाला होता है। गुरु नाम है ज्ञान का, हड्डी चमड़े को गुरु नहीं कहते।

कुदरत ने संसार बना दिया है और साथ ही ऋषियों को भी पैदा कर दिया है ताकि वह मनुष्य को इसी जीवन में सुखी रहने और भवसागर से पार होने का उपाय बतायें। तुम लोग सन्तान चाहते हो मगर यह नहीं सोचते हो कि सन्तान कैसी हो। तुम खेत में गेहूँ बोते हो और अच्छी फसल चाहते हो मगर आज कल का विज्ञान उन्नति कर रहा है। हमको नये नये तरीके बताये जाते हैं जिससे फसल अच्छी पैदा हो रही है। इसी तरह मनुष्य को यह ज्ञान होना चाहिये कि सन्तान कैसी पैदा करनी चाहिये ताकि वह संसार में सुखी रह सके। मैं चाहता हूँ कि मेरे विचारों का प्रचार हो। क्यों ? केवल मानव वंश की भलाई के लिये। वर्तमान धर्म या पंथ वाले नाम देते हैं। हुकूमत कोशिश करती रहती है और संत महात्मा कहते रहते हैं कि संतान कैसी पैदा करो। जैसी माँ-बाप की इच्छा होगी वैसी ही इनकी सन्तान पैदा होगी। अब, सवाल यह है कि क्या हम सन्तान को सन्तान के विचार से पैदा करते हैं। नहीं, बिल्कुल नहीं। हम काबू से बाहर (out of control) होकर स्त्री के पास जाते हैं और भोग विलास करते हैं। कोई तो शराब पीकर अपनी स्त्री के पास जाता है, कोई और नशा

करके। बस आज कल की सन्तान खुदरो या स्वयं पैदा होने वाली सन्तान है।

आजकल युवक वर्ग से लोग बहुत तंग आये हुए हैं क्योंकि यह कहना नहीं मानते। इसका जिम्मेवार कौन है ? केवल आप लोग! मैं ऐसा क्यों कह रहा हूँ? क्योंकि मेरा अनुभव मुझको ऐसा बतलाता है। मैं जब पहिली कक्षा में पढ़ा करता था, मैंने अपने एक साथी की जो एक हवलदार का लड़का था, कापी और कलम चुरा ली। उसने अपने बाप से शिकायत कर दी। हवलदार ने मेरे पिताजी से कहा। उन्होंने मुझे मारा पीटा। अब सवाल यह है कि मुझको चोरी करना किसने सिखाया ? वह मैंने अपनी माँ से सीखी। मैं बड़ा मातृभक्त था और उससे बड़ा प्रेम करता था। वह एक आदर्श स्त्री थी और आदर्श माँ थी। मेरी माँ कहा करती थी कि तेरा बाप सिपाही था जिसका पहरा स्टेशन पर हुआ करता था। जब वह पहरे से पैसे घर लाता था तो मैं उसकी जेब से कुछ पैसे चुरा लेती थी। एक बार तेरे पिता बीमार हो गये। उन्हें अस्पताल ले गये। उस समय उन्होंने अपने माथे पर हाथ रखा जिसका अभिप्राय यह था कि मेरे पास रुपया पैसा नहीं है। क्या किया जाय! तो मेरी माँ कहने लगी कि मैंने अपने पास से साठ सत्तर रुपया निकाले जो मैंने तेरे बाप की जेब से निकाल निकाल कर जमा किये थे। इससे तेरे बाप को सन्तोष हो गया। यह उन दिनों की घटना है जब मैं माँ के पेट में था। इस संस्कार से मुझ में चोरी करने की आदत पड़ गई। सांसारिक दृष्टि से मेरी माँ का यह काम चोरी का नहीं

है मगर सदाचार और आध्यात्मिक दृष्टि से इसे चोरी कहा जा सकता है।

कोई समय था जब 20-22 वर्ष के लड़के और लड़कियाँ इकट्ठे खेला करते थे। वे दोष रहित होते थे। अब आज कल के 5-5 वर्ष के बच्चों को भी विषय भोग का ज्ञान होता है।

मैं सत ज्ञान दे रहा हूँ। तुम लोग ध्यान पूर्वक सुनो। तुमने अभिमन्यु के बारे में सुना होगा। जब अभिमन्यु माँ के पेट में था। एक रात उसका बाप अर्जुन अपनी स्त्री को चक्रव्यूह का हाल सुना रहा था, अभिमन्यु अन्दर ही अन्दर माँ के पेट में सुन रहा था। उस समय में उसकी माँ को नींद आ गई और वह चक्रव्यूह में बाहर निकलने की विधि सुन नहीं सकी। इसलिये महाभारत के युद्ध में अभिमन्यु चक्रव्यूह भेदने में तो सफल हो गया मगर उससे बाहर नहीं निकल सका। मैं इस घटना को सत्य मानता हूँ। अभिमन्यु पर इसका अवश्यमेव प्रभाव हुआ होगा। जिस तरह मुझ पर अपनी माँ का प्रभाव पड़ा आज कल प्राय: देखा जा रहा है कि हमारे लड़के और लड़कियाँ पाँच-छ: वर्ष की आयु में ही गन्दी बातें करते रहते हैं क्यों ? क्योंकि घर में स्त्री पुरुष विषय भोग में लगे रहते हैं, चाहे स्त्री गर्भवती ही हो। इसका प्रभाव बच्चो पर पड़ता है। हम असंयमी होकर, काबू में न रह कर संतान पैदा करते हैं। ऐसी दशा में हमारे बच्चे असंयमी या बे काबू क्यों न होंगे। यह अनिवार्य है कि माँ बाप का प्रभाव बच्चों पर अवश्य पड़ता है।

मेरी अपनी लड़की एक अच्छे घराने में ब्याही हुई है। जब माँ इससे कुछ कहा करती थी तो वह तुरन्त बिगड़ जाती थी। मेरी स्त्री मुझसे शिकायत करती कि तुम गुरु बने बैठे हो और लड़की का यह हाल है। मैंने लड़की से पूछा वह कहती है कि पिताजी! मुझे पता नहीं होता है। जब भी माँ कुछ कहती है मैं इसके सामने बोलने से रुक नहीं सकती हूँ। वह माँ का कहना नहीं मानती। क्यों? इसका कारण है। हमारे यहाँ सन्तान थी। हम और सन्तान नहीं चाहते थे। एक बार मेरे काम के वश होने से यह लड़की गर्भ में आ गई। इनकी माँ तिलमिला उठी, वह चाहती थी कि शुरु में ही गर्भ गिर जाये मगर गर्भ न गिरा और समय पर यह लड़की पैदा हो गई। ऐसी दशा में यह कैसे आज्ञाकारी हो सकती है। जिन बच्चों को मां बाप नहीं चाहते वह क्यों कर अच्छे सिद्ध होंगे। आजकल लडके रेल गाड़ियों को रोकते हैं, बसों को आग लगाते हैं। वह जो-जो बिगाड़ करते हैं उसके हम स्वयं जिम्मेदार हैं।

मेरे एक रिश्तेदार का लड़का मेरे पास रहता था। वह विद्यार्थी था। उसे सिनेमा देखने की आदत पड़ गई थी। रात को वह खिसक जाता था और अपना बिस्तर इस तरह लम्बा बना जाता था जैसे कोई बिस्तर में सोया हुआ है। मैंने इस बारे में उसके बाप को लिखा उसने उत्तर में मुझे ताना दिया कि तुम साधु बने बैठे हो एक बच्चे को सुधार नहीं सकते। मैंने उसे जवाब में लिखा कि जब वह माँ के पेट में था, तुम दोनों मियां बीबी क्या कुछ नहीं किया करते थे। ऐसी दशा में बच्चे

पर क्यों न प्रभाव पड़ता। बात सच्ची थी। वह चुप हो गये।

हमारे ऋषियों ने मानववंश की बेहतरी के लिये भिन्न-भिन्न प्रकार के संस्कार बनाये हैं जो गर्भाधान से आरम्भ होते हैं। हम लोग इन सबको भूल गये हैं। यदि इनमें से किसी पर चलते हैं तो वह नाम मात्र के लिये। मेरी यह इच्छा है कि मेरे इन विचारों को प्रकाशित कराया जाये। वह भी इसलिये कि दुनिया वाले इससे लाभ उठा सकें। मुझे धन मान की इच्छा नहीं हैं। सालवान साहब की कृपा है कि यहां सत्संग का काम चल रहा है। जब देहली वालों ने लंगर लगाने की घोषणा की थी मैं कुछ फिक्र में था कि काम कैसे चलेगा जब कि इनके पास पैसा नहीं है। मेरे जैसे स्पष्ट वक्ता को लोग पैसा देने में संकोच करते हैं। मालिक बड़ी संभाल करता है। सालवान साहब ने लंगर का खर्च अपने जिम्मे ले लिया है। जब मनुष्य इस दुनिया में आ ही गया है तो उसे क्या करना चाहिये? वह अच्छे विचारों से काम रखे। विक्रम मेरा पोता है। मेरी पुत्र वधु एक दिन कहने लगी कि पिताजी। यह बहुत चंचल है। मुझे हर समय दौड़ाता रहता है। मैंने उससे पूछा कि जब यह पेट में था तो तू किसका ध्यान करती थी। उसने कहा हनुमानजी का। अब तुम सोचो जब मेरी पुत्र-वधु हनुमानजी का ध्यान करती रहे तो उसकी संतान चंचल क्यों न होगी। सिद्धान्त तो सिद्धान्त ही है। जैसा ख्याल वैसा हाल। मनुष्य सोच विचार से काम ले। मैं कहता हूँ कि कौम को बनाने वाली स्त्री जाति ही होती है। कोई बड़े से बड़ा लीड़र यह चाहे कि मनुष्य जाति का

सुधार हो सके तो यह असम्भव है। जब तक स्त्री जाति स्वयं अपनी स्थिति को ऊँचा नहीं कर लेती है कौम का सुधार होना असम्भव है।

माताओ! बहनों! बेटियों! याद रखो तुम दुर्गा हो, लक्ष्मी हो, सरस्वती या पार्वती हो। तुम ही कौम को बनाने वाली हो। तुम अन्नदा, बलदा और बुद्धिदा हो। स्त्री 9-10 महीने बच्चे को पेट में रखकर पालती पोसती है और इस बच्चे को अपना रक्त पिलाती है। बच्चे का मांस रक्त और देह सब कुछ माँ का है। जब वह बढ़ता है तो सबसे पहिले माँ ही उसका हाथ पकड़ कर चलने-फिरने की शक्ति देती है। वह बोलना सिखाती है। वह सभ्यता और सदाचार सिखाती है। वह दुनिया की पहिली गुरु है। आदर नाम, लौकिक और परमार्थिक उन्नति इन सबकी नींव रखने वाली स्त्री ही होती है। भगवान बुद्ध का कथन अक्षरस: सही है। जिस जाति में या जिस समाज में स्त्री जाति का अपमान होता है वहां से खैर व बरकत उठ जाती है। फिर कोई शक्ति उसको सँभाल नहीं सकती। जिन घरों में स्त्रियों का आदर मान नहीं होता वह शीघ्र बर्बाद हो जाता है। जिस पवित्र जिभ्या ने पहले वेदान्त की शिक्षा दी है वह एक स्त्री की जिभ्या है। सम्पूर्ण अच्छी बातों का आरम्भ स्त्री से ही हुआ है। स्त्री निश्चित रूप से समस्त पुरुषों की आदि गुरु है। इन्हीं स्त्रियों ने आध्यत्मिक गुरु के कर्तव्य किये हैं मगर कठिन बात यह है कि आज कल स्त्रियों को स्त्री बनना नहीं आता। आजकल स्त्रियों का गुरु पुरुष के बजाए स्त्री हो तो बेहतर है। मैं स्त्रियों का गुरु बना रहा हूँ। मैं कभी राय नहीं देता

कि स्त्रियों को राम नाम जपने पर जोर दिया जाये। मैं तो चाहता हूँ कि दुनिया में सुख से जीने का तरीका समझा जाऊँ ताकि उनका जीवन खुशहाल हो सके। स्त्रियों में पालन पोषण की शक्ति पूर्णता को पहुँची हुई दिखाई पड़ती है। स्त्रियों का दिल अत्यन्त सूक्ष्म, निर्भय, सहानुभूति वाला, पवित्र और सुन्दर होता है। स्त्रियों में दिल और मनुष्य में दिमाग होता है। जब तक दोनों के दिल और दिमाग मिले जुले न रहेंगे, घर या समाज का कोई काम भी न हो सकेगा।

यदि संतान पैदा हो गई और वह अच्छी नहीं है तो उसका सुधार कैसे करना चाहिए। देखो! खट्टे के फल में खट्टापन कम हो जाये और वह काफी मीठा हो जाये। इसी प्रकार गुरुमत में नाम देना पैबन्द लगाना ही तो है मगर पैबंद लगाते समय प्राय: ध्यान रखा जाता है कि अच्छे मीठे फल का पैबंद लगे। हमारे स्कूल मास्टर हड़तालें करते हैं तथा मरणव्रत रखते हैं। ऐसी दशा में जब इनका आचरण स्वयं अच्छा नहीं होता तो उनके शिष्यों से जो उनके पास पढ़ते हैं क्या आशा की जा सकती है। ऐसा पैबंद कब अच्छा फल ला सकता है। यह पैबंद सतपुरुषों का होना चाहिए।

मैंने अपना लड़का इसी नीयत से पैदा किया था क्योंकि मुझे अच्छी संतान की आवश्यकता थी। मुझे अपने जीवन में अवसर नहीं मिला कि मैं उसे झिड़की दूं या थप्पड़ मारूँ। मुझे नुक्ताचीनी करने या धिक्कारने को अवसर ही नहीं मिला। ऐसा क्यों हुआ? क्योंकि मैंने उसे अच्छी नीयत से पैदा किया था। दूसरे शब्दों में पैंबद लगाने वाले

स्वयं क्रियात्मक होने चाहिये। मैंने यह गुरुयायी का काम इसलिए नहीं किया है कि मैं धन दौलत इकट्ठा कर जाऊँ। यदि करता हूँ तो ऐसी दशा में यह कहा जायेगा की मेरी नीयत में 420 करना है। फिर मेरे उपदेश सुनने वालों के जीवन कैसे बदल सकते हैं। तुम लोग उसे गुरु समझते हो जो तुम्हारे स्वप्न में प्रकट होता है, जो तुम्हारी सुरत को ऊपर चढ़ाता है या मरते समय साथ ले जाता है। मैं कहता हूँ तुम लोग गलती पर हो। मैं तुम्हारे सामने बैठा हुआ शपथ पूर्वक कहता हूँ कि मैं किसी के अन्दर नहीं जाता। यदि कोई गुरु जाता है तो उसकी वह जाने। मुझको इसकी कोई जानकारी नहीं है। मैं अपनी बात कहता हूँ कि मैं किसी के अन्दर कभी नहीं जाता। इटारसी वाला जोगेन्द्र सिंह कहता है। इसका बाप वहां पर मरा है। उसके मरने से चार दिन पहले मैं उसके पास गया और उससे कहा था कि चार दिन में उसको ले जाऊँगा। अंतिम दिन वह कहने लगा- बाबा फकीर आ गया है। वह हवाई जहाज़ लेकर आया है। तुम लोग पाठ करो। पाठ होता रहा। हिचकी आई और वह चल बसा। मैं सच कहता हूँ कि मैं वहाँ पर नहीं गया।

सतगुरु नाम है सत ज्ञान का। तुम गुरु की खोज किया करो। इसलिये सार वचन में कहा गया है-

गुरू खोजो री, जगत में दुर्लभ रतन यही।

यह लाल सिंह बैठा हुआ है। वह कहने लगा भूत आया है। वह बाबा फकीर को याद करता रहा। 15 मिनट के बाद बाबा फकीर

आ गया। बाबा फकीर ने उस भूत को इतना मारा कि वह मर गया। 15 मिनट की देर भी इसलिए हुई कि वह बाबा फकीर को होशियारपुर में बैठा हुआ ख्याल करता था। यह सारा खेल क्या है? कोई बाहर से राम, कृष्ण या गुरु नहीं आता है। ऐ इन्सान! तू भूला हुआ है। तेरा अपनी ही आत्मा महा बलवान है। मनुष्य का विश्वास ही काम करता है। जिस प्रकार के संस्कार तुम्हारे दिमाग पर पड़े हुए होते हैं, वह फुरते रहते हैं। मैं डाक्टर हूँ। जो गंदा पदार्थ तुम्हारे शरीर के अन्दर पैदा हो गया हैं मैं नश्तर देकर उसे निकालता रहता हूँ। मैं संसार के सूक्ष्म विचार रखने वाले जीवों की गंदगी का आपरेशन करता रहता हूँ। आप लोग आपरेशन कराने से घबराते हैं मगर घबराने की आवश्यकता नहीं है।

पैबन्द उसका लगाना चाहिये जिससे जीवन आनन्द दायक जाये। पैबन्द उस महापुरुष का लगे जो नि:स्वार्थी हो और जिसमें प्रेम हो ताकि उसका संस्कार तुम में भी आ जाये। मैं जो कुछ कहता हूँ आपके हित और आपकी बेहतरी के लिए ही कहता हूँ। यहाँ गुरु तो हर कोई व्यक्ति बन जाता है और गद्दी संभाल लेता है ताकि उसकी कीर्ति हो जाये और वह ऐश आराम उड़ा सके। यह देखा गया है कि लगभग सब ही गुरु अपने स्वार्थ के लिए नाम दान देते हैं। नि:स्वार्थ सेवा करना कुछ और है।

मेरा जीवन दाता दयाल के साथ प्रेम करने से बदला है। प्रेम में बड़ा प्रभाव होता है। एक बार की बात है कि पिंडदानखां में मैं 7वीं

या 8वीं क्लास में पढ़ता था। एक दिन मेरे पिता ने किसी गलती पर मुझे खूब मारा पीटा। मैंने फिर हठ की कि मैं स्कूल न जाऊंगा। चुनांचे एक मुहर्रिर साहब ने जो मुझ से प्रेम किया करते थे, मुझे कहा कि मैं स्कूल जाऊँ। उनके प्रेम की वजह से मैं उन की बात मान गया। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि प्रेम में बड़ा भारी प्रभाव है। किसी आदमी को ढालने के लिये, किसी का जीवन बनाने के लिए प्रेम आवश्यक है।

तुम सतपुरुषों से प्रेम से किया करो। यह कोई आवश्यक बात नहीं है कि तुम उन्हें गुरु ही मानकर सत्संग करो। मन्तव्य तो केवल इतना है कि दो दिलों का मिलाप हो जाये। मेरा और दाता दयाल का प्रेम ऐसे ही था जैसे माँ और बच्चे का प्रेम होता है। सोसायिटी में आपको कई प्रकार के ऋण देने होते हैं। माता, पिता, गुरु और समाज का ऋण अपना कर्तव्य पूरा करना है। इनकी सेवा करना तुम्हारा प्रथम कर्तव्य है। जो व्यक्ति इन कर्तव्यों को पूरा नहीं करता वह इस पद तक नहीं जा सकता। यदि हम अपनी संतान से दुखी हैं तो हम उसके जिम्मेवार हैं। हमारे विचारों का प्रभाव उन पर पड़ता है। मेरी बड़ी लड़की है। वह अर्ध उन्मत है। क्यों? क्योंकि इसके पैदा होने के समय मैं चाहता था कि वह कामी, क्रोधी, लोभी और मोही न हो। वह ऐसी है। विवाह के बाद वह कठिनता से कुछ महीने अपने ससुराल में रही। मेरा दामाद उसे मेरे घर छोड़ गया कि उसकी आवश्यकता नहीं है। मैं दाता दयाल के पास लाहौर गया। वह कहने लगे- फकीर

बनकर आया हुआ है। तुमने कैसी संतान पैदा की है। इसका अभिप्राय यह है कि यदि हमारी संतान खराब है तो उसके जिम्मेदार हम हैं।

सतपुरुषों का सत्संग यहाँ परमावश्यक है मगर वह इतने चेले बना लेते हैं कि उसके यहाँ भीड़ लगी रहती है। लोग दरवाजे पर खड़े हुए हैं मगर उनके पास समय नहीं होता कि अपने चेलों की बातें सुन सकें। वह इनसे रुपया अवश्य लेते हैं मगर मिलने के लिये समय नहीं देते हैं। यहां एक तरह अंधेरा सा मचा हुआ है। ऐसी दशा में अगर कोई बड़ी रकम लेकर उनके पास जाने का इच्छुक होता है तो उसके लिए दरवाजा खुल जाता है।

तुम लोग भूले हुए हो। मैं भारतवर्ष के जीवों के लिए सच्चा संदेश लेकर आया हूँ। यही संस्कार मनुजी महाराज ने दिया था मैं अभी हाल में मनाली गया था। वहा पर भृगु, व्यास, ऋषियों के आश्रम देखे। उन्होंने अपने समय पर अपने अपने ढंग से शिक्षा दी। प्रवृत्ति मार्ग वाले संसार में अच्छे संस्कार लिया करें। यह भृगु ऋषि की शिक्षा है। जैसा कार्य वैसा फल। यही राधास्वामी मत की वाणी है। स्वामी जी महाराज ने भी लिखा है कि कर्म का फल अवश्य मिलता है। इन्हीं बातों को सुनकर मैं डर गया था। मैंने बड़े-बड़े महापुरुषों के जीवनों का अध्ययन किया हैं और पता लगाया है कि उन्होंने बड़े-बड़े कष्ट सहे हैं। पल्टू साहब कहा करते थे कि-

हम वहां के वासी। जहाँ पहुंचे नहिं अविनासी॥

इनकी प्रतिष्ठा को देखकर ईष्यालु साधुओं ने उन्हें जिन्दे को

खौलते हुए तेल में डाल दिया। रामकृष्ण परमहंस का अनुयायी साधु इन्दौर में आया था। उसने बताया कि एक अंग्रेज के अन्दर परमहंस जी का रूप प्रकट हो गया। उसने परमहंस जी को इस बारे में लिखा मगर परमहंस जी ने उसका खंडन कहीं नहीं किया है। इस कारण से परमहंस जी को कैंसर हो गया था जिससे इनकी मृत्यु हो गई। जब मैं जिन्दा किसी अन्दर नहीं जाता तो मेरी समझ में नहीं आता कि दूसरे गुरु जिनकी पूजा की जाती है वह किस तरह जिन्दा किसी अपने पुजारी के अन्दर जाते हैं। कृषक (श्री गोपी लाल) तीन वर्ष तक मेरा ध्यान करते हुए अन्तरीय स्थानों को पार कर गये। कोई समय था जब भूपसिंह आत्म हत्या पर उतारू हो गया था। पहिले इसका कुतुब मीनार से छलाँग मार कर मरने का इरादा था। फिर जमुना में डूबकर जीवन समाप्त करने की धुन थी। इसकी यह दोनों स्कीम पूरी न हुई। अंत में जब यह बिजली को छूकर मरने की तैयारी कर रहा था, इसके कहने के अनुसार मैं प्रकट हो गया और इससे कहा जाग! जाग!! जाग!!! यह कहते हुए मैं आकाश में उड़ गया और तारे की शकल का बन गया। मुझे कृषक और भूपसिंह के अन्दर प्रकट होने और इनकी सहायता करने का कोई पता नहीं है। ऐ इंसान यह तेरी अपनी ही आत्मा है या तेरा अपना ही मन है। विश्वास की दृढ़ता से यह सारा खेल हो रहा है। इस जगत में मांग और पूर्ति का नियम काम करता है। तुम मांगों और तुमको अवश्य मिलेगा। कुदरत की ओर से जिज्ञासु के लिए कोई न कोई साधन निकल आयेगा। मैं तो यह निर्भयता से कहूँगा

कि न इन पंडितों ने सच्चाई से काम लिया है और न इन महात्माओं ने किन्तु इन सबने अपने यश के लिये झूठ सच की मिलौनी कर दी है। जब मैंने इन महात्माओं के अंतिम परिणाम पर दृष्टि डाली तो मैं डर गया कि इस चार दिन के जीवन में यदि मैंने पांच सौ या पांच हजार चेले बना लिये और इनसे प्रति चेला एक एक रुपया मासिक भेंट ले लिया तो पांच हजार रुपया सरलता से जमा हो जायेंगे मगर यह मेरे किस काम के होंगे। मेरे कर्म तो मेरे साथ जायेंगे। यह हेरा-फेरी भयानक परिणाम पैदा करेगी। हमको तो अपना जीवन सुधारने का प्रयत्न करना चाहिये। हम अच्छे आचरण वाले बनें और अच्छी सन्तान पैदा करें। किसी को धोखा न दें ताकि जिस समाज में हम रहते हैं वह अच्छी भली बनी रहे और लोग सुख शान्ति का जीवन व्यतीत कर सकें। मैं समझता हूँ कि यदि दो आदमी मिलकर नेक नियती से काम करेंगे तो उनको घाटा नहीं पड़ सकता। घाटा या हानि तब ही होती है जब मनुष्य की नीयत खराब हो जाती है। सुदामा का हाल आप लोगों ने पढ़ा होगा। वह कृष्ण जी का सहपाठी था। एक दिन अकेले ही चने खाते देखा गया और कृष्ण जी को नहीं दिये। इसका फल जो उसे मिला वह सब लोग जानते हैं। वह जीवन पर्यन्त तंग रहा। अन्त में कृष्ण जी ने उसे गरीबी से छुटकारा दिलाया। अभिप्राय इसका यह है कि तुम लोग अपनी अपनी नीयत ठीक रखा करो। तुममें आपस में प्रेम बना रहे। तुम किसी को धोखा मत दो।

मेरे पिता और उनका भाई दोनों इकट्ठे रहते थे। आपस में

खुदगर्जी थी। परिणाम इसका यह हुआ कि घर में बरकत नहीं रही। परिस्थिति बदली। अलग-अलग हो गये। फिर हेरा-फेरी बंद हो गई और सुख समृद्धि पैर चूमने लगी।

मैं वेद शास्त्र पढ़ा लिखा हुआ व्यक्ति नहीं हूँ मगर क्रियात्मक अवश्य हूँ। इस आधार पर आप लोगों को परस्पर प्रेम की हिदायत करता रहता हूँ। घर में रहते हुये यदि देवरानी और जेठानी आपस में घृणा और द्वेष करती हैं तो इससे अच्छा यह है कि अलग-अलग हो जायें और अपने-अपने कर्म को ठीक रखें। मनुष्य की नीयत ठीक रहनी चाहिये।

मैं बसरा बगदाद में था। वहां से बहुत सा रुपया घर भेजता रहा। मगर जब मुझे यह पता चला कि एक मुंशीराम नामी आदमी की जमीन हेराफेरी से हमारे हिस्से में आई हुई है। मैंने उसमें रहने से इंकार कर दिया। वहाँ अब कौवे बोलते हैं।

यदि तुमको विद्वान बनना है तो तुम विद्वानों के साथ जाओ और यदि जीवन की गढ़त करनी है तो मेरे पास आओ क्योंकि मैं क्रियात्मक आदमी हूँ। संत कृपाल जी रचनात्मक (constructive) प्रोग्राम पर ज़ोर देते रहते हैं। मैं मनुष्य जीवन का प्रोग्राम बनाने के लिये आया हूँ और चाहता हूँ कि मनुष्य! का जीवन सुखी बना रहे। यह काम अमल करने या क्रियात्मक होने से होगा। मेरा काम ज्ञान देना है और रहस्य बताना है। हित और प्रेम की शिक्षा फैलाना है। यह मेरी ड्यूटी है। मेरी समझ में यह आया है कि मनुष्य का प्रेम और

सच्चा विश्वास ही विचित्र काम कर जाता है। मैं धर्मशाला गया। एक आदमी मुझसे कहने लगा। बाबा फकीर ने मुझे नदी में डूबने से बचा लिया है। मगर मैंने नहीं बचाया वह भी झूठ नहीं बोलता और मैं भी झूठ नहीं बोलता हूँ। इस दृष्टि से मैंने उसे नहीं बचाया है। इसके बचाने वाला कोई और ही होगा। मैं तो यही कहता रहता हूँ कि ऐ इन्सान! तेरी अपनी आत्मा और मन ही महा बलवान है। तेरे अपने ही विश्वास से इसमें महान शक्ति आ जाती है जो चमत्कार दिखाती है। हर एक आदमी जानता है कि वशिष्ठ ऋषि ज्ञान दे गया है। मैं भी तो ऋषियों की शिक्षा देता हूँ मगर मैं पुस्तकें पढ़कर शिक्षा नहीं देता। मेरे पास तो दिल की पुस्तक खुली हुई है, जिसे मैं अधिकतर पढ़ता रहता हूँ और अपना अनुभव लोगों को कहता रहता हूँ। इस पर चलना या न चलना आप लोगों का काम है।

हम लोग गृहस्थी हैं। मैं स्वयं निर्वाणपद का अनुयायी हूँ। निर्वाणपद ही हमारा ध्येय है मगर मैं जानता हूँ कि इस समय संसार को निर्वाण पद की आवश्यकता नहीं है। जो आदमी भी मेरे पास आता है वह संसार के भ्रम का मारा हुआ आता है।

राधास्वामी मत को अभी दुनिया ने नहीं समझा हैं। यह मत केवल उन लोगों के लिये हैं जो भवसागर से बचना चाहते हैं। इस मार्ग पर केवल वे लोग आयें जिनको स्त्री की आवश्यकता नहीं है, संतान की आवश्यकता नहीं है जिसे धन की आवश्यकता नहीं है। जब राधास्वामी दयाल चोला छोड़ने लगे तो उन्होंने कहा कि मैं

सतलोक जा रहा हूँ। मेरे पीछे मेरी स्त्री की इज्जत करना। क्या उन्होंने स्त्री के प्रति कर्तव्य पूरा नहीं किया।

हुजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज ने डेरा बनाया था। दाता दयाल ने भी गाँव में धाम बनाया हुआ है। उनका प्रयोजन यह था कि गांव में धाम बनाने से गाँव के गरीब आदमियों के लिये आमदनी का कुछ साधन बना रहेगा और वे लोग अपना पेट सहूलियत से भर सकेंगे। तुम लोग इन महात्माओं के जीवन से शिक्षा लिया करो।

तुम लोग अपनी आंखें खोलो। 'ईश्वर' परमात्मा या मालिक यहाँ नहीं रहता है। उसकी केवल किरणें यहाँ मौजूद हैं। तुम देखते हो सूर्य यहां नहीं रहता है। केवल उसकी किरणें यहां पर रहती है। सूर्य यदि पृथ्वी पर आ जाये और सब कुछ जल कर भस्म हो जाये। इसी प्रकार ईश्वर का हाल समझो।

गुरु ने अबल, निबल और अज्ञानी जीवों की सहायता करने का काम मेरे सुपुर्द किया है। मैं उसे निभा रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि मनुष्य मनुष्य की सेवा करे। तुम विशेष रूप से उन लोगों की सेवा किया करो जिनको भगवान ने तुम्हारे साथ लगा रखा है जैसे बाल बच्चे, मां बाप, भाई बहिन आदि आदि। यह मेरा संदेश है। मैं नहीं चाहता कि तुम अपनी गाढ़ी कमाई इन गुरुओं को देते रहो जिनका रूप तुम्हारे अन्दर प्रकट होता रहता है। तुम उन्हीं को गुरु मानते हो। वास्तव में यह तुम्हारे अपने ही विश्वास का फल या परिणाम है। इसी कारण से मानव जाति भिन्न-भिन्न धर्म सम्प्रदायों बंट गई है। लोग

कहते हैं कि मैं अमुक अमुक व्यक्ति के अन्दर प्रकट हुआ हूँ। यह गलत है। मैं कहीं नहीं जाता किन्तु इन सत्संगियों की बातें सुन सुन कर कि मैं अमुक अमुक के अन्दर प्रकट हुआ मेरी आंखें खुल गई हैं।

अब तुम गुरुओं को भेंट देने के बजाय अपने परिवार वालों को पाला करो और परिवार के दुखियों की सहायता करने में खर्च किया करो। गुरु नाम है ज्ञान का। मैं ज्ञान दाता हूँ। इस 82 वर्ष की आयु में अपना सिर खपाता रहता हूँ इसलिये कि आप लोग संभल कर शान्ति और सुख का जीवन व्यतीत कर सकें। मैंने 'मानवता मन्दिर' इसलिये बनवाया हुआ है कि संसार में सच्चे ज्ञान का प्रकाश रूपी सूर्य चढ़ा हुआ रहे और अज्ञानता दूर हो जाये। इस मन और आत्मा के परे हमारा असली घर है जहाँ से हम लोग आये हुये हैं। वह एक परमतत्त्व है। वहाँ तक पहुंचने के लिए साधन अभ्यास की आवश्यकता है। मैं करोड़ पतियों की परवाह नहीं करता हूँ किन्तु मेरी दृष्टि केवल अधिकारियों और दुखियों की ओर अधिक रहती है। मैं बड़ा ही अज्ञानी जीव था मगर दाता दयाल ने मेरी आंखें खोल दीं। यह शिक्षा मैंने सीधे उनसे सीखी है। गवर्नमेंट, समाज, सनातनधर्म, राधास्वामी मत और अन्य धर्मावलम्बी सब अपने अपने सत्संग के लिये चन्दा माँगते फिरते हैं। गवर्नमेंट टैक्स लेती है। हम महात्मा लोग भी अपना अपना टैक्स लेते हैं। इसी तरह आप लोग भी अपने-अपने परिवार वालों का ध्यान रखा करो। हम सब गृहस्थी लोग मूर्ख हैं। जो हर जगह टैक्स देते फिरते हैं।

दाता दयाल ने धाम इसलिये बनाई थी कि इस क्षेत्र के लोग इससे लाभ उठायें और उनको उद्यम मिल सके। किसी ने चिकनी चुपड़ी बातें आपसे कह दीं, आप लोग उससे उसके चक्कर में आ जाते हैं और लुट जाते हैं। मरते समय कोई देवता या गुरु आ जाता है, कोई देवी, राम, कृष्ण आ जाते हैं तुम को लेने के लिये। यह गलत बातें हैं। बाहर से कोई देवता, रामकृष्ण या गुरु नहीं आते।

ऐ मानव! तेरा अपना विश्वास ही यह सब काम करता है। तू अपनी आत्मा की शक्ति को भूल गया है। तेरे अपने मन में, तेरी अपनी आत्मा में बहुत बड़ी शक्ति का भंडार है। तू सचेत हो जा।

राधास्वामी

परमसन्त

हज़ूर परम दयाल पं. फ़कीर चन्द जी महाराज

सालवान स्कूल नई दिल्ली, 19.10.1969

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि यहां पर लाखों करोड़ों अवतार, पीर, पैगम्बर और गुरु आये और गये। सृष्टि में करोड़ों चन्द्रमा, सूर्य तथा तारागण मौजूद हैं। इनमें भी जीवधारी बसते हैं। तेरे जैसे लाखों भोंक-भोंक कर चले गये। वह इस दुनिया का क्या भला कर गये। तूने अपने सिर पर क्यों यह खब्त ले रखा है? क्या तू इस दुनिया का सुधार कर सकेगा? यह तो कुत्ते की दुम है। उसे लाख सीधी किया करो फिर भी यह टेढ़ी की टेढ़ी रहती है।

मित्रो! यह मेरा अपना कर्मभोग है जो यह सत्संग का काम करता रहता हूँ। छोटी उम्र से उस मालिक से मिलने का ख्याल लेकर आया था। मैं हिन्दू हूँ। ब्राह्मण कुल में जन्म लिया है। मैं राम, कृष्ण, ईश्वर को मानने वाला था। इन संस्कारों के कारण कि भगवान मानवरूप में आया करता है, मैं ढूँढ़ते-ढूँढ़ते दीवाना हो गया। मेरा एक स्वप्न था जो मुझे दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज के चरणों में ले गया। उन्होंने फकीरों और सत्संग की बड़ी महिमा बताई है। वह एक जगह लिखते हैं-

मैं नहिं राम कृष्ण का सेवक, ईश ब्रह्म नहिं जानूँ।
मैं फकीर का दास दीवाना, सबसे बढ़ कर मानूँ॥
जो फकीर मोहि दर्शन देवे, अपना भाग सराहूँ।
अपने चाम की जूती, पग फकीर पहिनाऊँ॥

मैं दाता दयाल के पास इसलिये गया था कि इस सर्वाधार कूटस्थ को अर्थात् सच्चे मालिक को जहां से मैं आया हूं, मिल सकूं। वहां जाते ही मेरे जैसे संस्कार वाले को ऐसी शिक्षा मिल जाये कि राम कृष्ण आदि अवतार छोटी श्रेणी के हैं तो उसके मन की क्या दशा हुई होगी आप स्वयं समझ सकते हैं। मैंने दुखी होकर उस समय प्रण किया था कि जो कुछ अनुभव मुझे इस मार्ग पर चलने से होगा वह मैं संसार को बता जाऊँगा। यह सत्संग का काम मैं अपने प्रण पूरा करने के लिये करता रहता हूँ।

सन्त मत या राधास्वामी मत में आने से मुझे क्या मिला है ? जो कुछ मुझे मिला है वह मैं सच्चाई से कहता हूँ। थोड़ा ध्यान देकर सुनने की आवश्यकता है। मुझे सच्चे मालिक के निज स्वरूप का अनुभव हो गया है। इस अनुभव को पूरी तरह सम्पन्न कराने के लिये दाता दयाल ने मुझे गुरु पदवी दी जिस पर कार्य करने से मेरा काम बन गया। तुम लोग मेरे पास धन मान, स्वास्थ्य, सन्तान और दुनिया के पदार्थ लेने के लिये आते हो। मेरी दशा इसके बिल्कुल विपरीत थी। मैं गुरु के पास केवल इसलिये गया था कि मालिके कुल के दर्शन कर सकूँ और उसमें पूरी तरह से मिल सकूँ। बाणी में लिखा है कि सतगुरु ही मालिके कुल के रूप को दर्शाते हैं। दाता दयाल का शब्द है–

तेरी काया में सत करतार, भटका क्यों खावे।
तेरी काया ही स्वर्ग दुआर, भटका क्यों खावे॥
सत्त पुरुष काया के वासी, अलख अगम का द्वार, भटका क्यों खावे॥
सतगुरु सत्तपुरुष के कर्त्ता, इनसे करले प्यार, भटका क्यों खावे॥
सतगुरु दर्शन संत के रूप में, निज बानी टकसार, भटका क्यों खावे॥
राधास्वामी चरन शरण बलिहारी, दर्शन पाले सार, भटका क्यों खावे॥

मेरे सतगुरु इस समय आप लोग हैं जब आप यह कहते हैं कि मेरा रूप आप लोगों के अन्दर प्रगट होता रहता है मगर वास्तव में मैं नहीं होता हूं तो मैं असली मालिक के कुल के रूप को खोजने को विवश हो गया हूँ। सतगुरु का एक रूप नहीं है किन्तु उसके अनेक रूप हैं। हर एक वस्तु के पाने के लिये अलग-अलग युक्ति और

उपाय है। निर्वाण प्राप्ति के उपाय अलग हैं।

गुरु ज्ञान देता है। याद रखो! हर एक मनुष्य की इच्छा और उसकी प्रकृति अलग अलग होती है। जो गुरु केवल निर्वाण पद की शिक्षा देता है उसको प्राप्त करने का मार्ग बताता है, वह पूर्ण गुरु नहीं है। वह उत्तम गुरु कहलाता है। पूर्ण गुरु सर्वगुण ज्ञाता होता है।

हमारा जीवन है। इसमें शारीरिक, मानसिक और आत्मिक भान बोध होते रहते हैं जो दुखदाई होते हैं। सौभाग्य से मुझे अपने जीवन में ऐसे सतगुरु (दाता दयाल) मिले थे, जो मेरा दीन और दुनिया सुधार गये हैं और जिन्होंने मन, आत्मा और निर्वाण का निर्णय किया है।

आप लोग मेरे पास आते हैं। मैंने सुबह भी कहा था कि पैबन्द लगाओ ताकि दुखदाई जीवन बदल कर सुखदाई हो जाये। यदि किसी पूर्ण गुरु से पैबन्द लगी हुई है तो तुम्हारी शारीरिक, मानसिक और आत्मिक अवस्थायें अवश्य ठीक हो जायेंगी। मैं दाता दयाल के पास गया था। मुझे और शिक्षा मिली थी! मेरी स्त्री को और शिक्षा मिली थी। वह बड़ी स्वाभिमानी थी, उसे यह संस्कार दिया गया था कि जो कोई एक कहे तो तुम उसको 16 सुनाओ। इस ढंग से वह हल्की रहती थी। कोई क्यों किसी के साथ ज्यादती करे। दुनिया वाले सीधे सादे मनुष्य को व्यर्थ तंग किया करते हैं। मेरा छोटा भाई दाता दयाल के पास गया था। उसको शिक्षा दी गई थी। काम करना जीवन है और जीवन का अर्थ है काम। इस शिक्षा से वह सन्तुष्ट हो गया और बड़ी

उन्नति कर गया। इसे सरकार से रायसाहब का खिताब मिला और अब वह खुश है। अभिप्राय यह है कि गुरु वह है जो प्रत्येक मनुष्य की प्रकृति को पहचान कर उसके अनुसार उसका इलाज करे जिससे वह सन्तुष्ट हो जाये। यहाँ पर मर्द वही है जो अपनी स्त्री की भली प्रकार सँभाल कर सके। इसके विरुद्ध जो व्यक्ति अपनी स्त्री की इज्जत की रक्षा और उसका पालन पोषण ठीक ढंग से नहीं कर सकता तो वह पति, पति नहीं कहला सकता किन्तु वह स्वार्थी है। मैं हाल में कश्मीर गया था। वहाँ पर भास्कर नाम कश्मीरी पंडित मिला जो दाता दयाल के बड़े भक्त हैं। उन्होंने सुनाया था कि दाता दयाल एक बार कश्मीर पधारे थे। उन्होंने वहाँ के सत्संगियों के यह कहा था– 'अहिंसा परमोधर्म:' यह शिक्षा उनको दी गई थी। यह लोग घबराये मगर दाता ने उनसे कहा– 'मरो और मारो'। अब यह ही तुम्हारा धर्म है। दातादयाल ने उनकी स्त्रियों से कहा था कि चोगा और जेवर उतार दो। सलवार और कमीज पहना करो। उस समय दाता दयाल वहाँ की स्थिति का अनुभव लगाकर इस परिणाम पर पहुँचे थे कि इन लोगों पर आपत्ति और सख्ती का समय आने वाला है। बाद में सचमुच वहाँ पर क्रान्ति आ गई। इस शिक्षा से न केवल उनकी जान बची किन्तु सामान और इज्जत भी सुरक्षित रहे। यह पूरे गुरु का काम है।

स्वामी गोविन्द कौल भी मुझे कश्मीर में मिले थे। अब उनके कई हजार चेले स्विटरलैंड में मौजूद हैं। इनका जब दातादयाल से मिलाप हुआ तो दातादयाल ने इनसे कहा था कि तुम जीवन भर

परमार्थ के विषय में मुझसे सवाल न करना। तुम सत्संग में बैठे रहो। सत्संग को सुनते रहा करो और उन पर अमल करते रहा करो किन्तु परमार्थ के विषय में प्रश्न न करना। यह उनका आदेश था। उस समय से यह स्वामी जी महाराज पांच हजार चेलों के गुरु हैं। सन्त सतगुरु वक्त रोज रोज पैदा नहीं होते। जब पृथ्वी सतलोक के ठीक सामने (Parellel) आ जाती है उस समय कोई सन्त सतगुरु वक्त पैदा होता है। फिर वह क्या करता है? वह उस समय की परिस्थिति को देखकर शिक्षा देता है ताकि जीव सुख और शान्ति का जीवन गुजार सकें। यही सन्त सतगुरु का काम होता है।

कुबेर नाथ (रसरावासी) दातादयाल का शिष्य है। दाता दयाल ने इसे यह कहा था कि जब इसका किसी काम में झगड़ा हो जाये तो यह अपने आपको सफलीभूत समझे। मेरा अभिप्राय इन बातों के कहने से यह है कि संत सतगुरु वक्त वही होता है जो जीवों की प्रकृति को देखकर इलाज बतलाये जिससे उन्हें सुख शान्ति मिले।

मैं, पीरे मुगां साहब, कृषक जी सब ही गुरु बन गये। हमारे लिये यह आवश्यक है कि हममें गुरु के गुण उत्पन्न हो जायें ताकि किसी का उद्धार कर सकें। मैं बड़ा भाग्यशाली पुरुष हूँ कि जिसे ऐसा गुरु मिल गया। अब मैं चौथे या पांचवें पद में रहता हूँ। अब मुझे किसी से कोई लाग लपेट नहीं रही है। अब मेरे मन में पूरी इस्तगना (निर्लिप्तता) आ गई है मगर अभी गुरुऋण मेरे सिर पर मौजूद है। इसको उतारने के लिये मैं रात दिन सत्संग के काम में लगा रहता हूँ।

आज शब्द पढ़ा गया था–

वन्दनस् सत ज्ञान दाता.....

मैंने जो सत् ज्ञान सीखा है उसके आधार पर काम कर रहा हूँ। अब देहली में सन् 1970 ई. में विश्वधर्म सम्मेलन हो रहा है। मैंने यह समझते हुए कि विश्वधर्म में उपस्थित होना है छः सत्संग होशियारपुर में दिये हैं जिनमें सामाजिक, मानसिक, आत्मिक, राष्ट्रीय, धार्मिक, निर्वाणपद अर्थात् हर पहलू से मैंने प्रकाश डाला है। यह हिन्दी में और उर्दू में छप गये हैं। जिसके जी में आये उन्हें पढ़ कर लाभ उठायें।

दाता दयाल ने अपनी पुस्तकों में मेरी अत्यन्त प्रशंसा की है। और कहा है कि तेरी उत्तम देही है और तू परम दयाल सनेही है। अब मेरी समझ में यह नहीं आता है कि मैं किसी का किस तरह उद्धार करूँ। उद्धार कर सकता हूँ। मैं फूंक मार कर कुछ देने का दावा नहीं करता हूँ। हां, सही मार्ग दर्शन (Correct guidance) दे सकता हूँ जो विचार कि फिलोस्फी पर आधारित है। चूंकि लोगों को मुझसे लाभ पहुँच जाता है वह मेरे नाम का ढ़िंढोरा पीटते रहते हैं। दाता दयाल ने एक जगह पद्य में लिखा है जिसका साराँश यह है– अब तो गुरु के सत्संग में आ गया है। अच्छा किया अब मुझे सत्संग मिल गया है। अब कुसंग को त्याग कर मन सुसंग में लगा दिया कर। मोह, मद, अभिमान त्याग दे। इससे यह होगा कि तेरा मन कभी भंग (विचलित) नहीं होगा।

क्रमश....

मानव जीवन का उद्देश्य

परमसन्त
हजूर मानवदयाल जी महाराज

अलीगढ़ - 16.2.1988

मानुष जनम सुधार तू, मेरी सुरत सुहागिन॥
पिया की शरण में जल्दी आजा, चित धर प्रेमपियार तू॥
माँग भरी भक्ति सिंदूर से, माँग परम सिंगार तू॥
क्षमा की चनरी दया की साड़ी, पहन के चल दरबार तू॥
पिया के महल का सुख आनन्द ले, डाल जगत सिर छार तू॥
राधास्वामी साँचे प्रीतम, चरन कमल हिये धार तू॥

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्,
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।

राधास्वामी!

मेरे सत्संगियो, तिथि के अनुसार आज दाता दयाल जी महाराज का जन्मदिन भी है और निर्वाणदिन भी। अक्सर सन्त जिस दिन प्रस्थान भी करते हैं। क्योंकि यह जगत् काल का है और काल के नियमों पर चलना बुरी बात नहीं है। परमतत्त्वातार इस जगत् में इस

मकसद को लेकर आता है कि उसके अपने ही अंश, जो इस जगत् में फँसे हुए हैं, उनको चेताकर, उनको मार्ग पर लगाकर, निजधाम पहुँचाये। वह समय की चाल को लेकर, कर्म को लेकर, विशेष समय के मुताबिक आता है उसे इस संसार को छोड़ने में दु:ख नहीं होता बल्कि खुशी होती है। मृत्यु अपने आप में कोई बुरी चीज़ नहीं है। मृत्यु का अर्थ है काल के जगत् से निकल कर दयाल देश में जाना। इस जगत् के अन्दर मनुष्य के पूर्णत्व में जितनी बाधाएँ हैं, जितनी रुकावटें हैं, उन सब के हट जाने का नाम ही मृत्यु है। यह जगत् द्वन्द्वात्मक है। यहाँ पर सुख-दु:ख, निंदा-स्तुति, राग-द्वेष, जन्म-मरण दोनों हैं। लेकिन इस जगत् के अन्दर द्वन्द्व का अनुभव करने वाला, परमतत्त्व एक है। वह दो नहीं हैं। असल में अविनाशी सुरत ही सुहागिन है जिसका पिया देश में है। कबीर परमतत्त्वातार, इस जगत् में आये। वह इस जगत् में अपने आने के मकसद को जानते थे, फिर भी इस काल जगत् के नियमों पर चले। कबीर साहिब को पाँच साल की उम्र में ही पूरा ज्ञान हो गया था। लेकिन इस जगत् में अपने पिया से मिलने के लिए सनातन धर्म की परम्परा के अनुसार, उन्होंने गुरु धारण किया। कबीर साहिब ने बहुत सुन्दर तरीके से सनातन धर्म की परम्परा को निभाया।

पाँच वर्ष की आयु में कबीर साहिब स्वामी रामानन्द के आश्रम में दीक्षा लेने के लिए गये। स्वामी रामानन्द उस समय बनारस में एक उच्चकोटि के सद्गुरु माने जाते थे। आश्रम में स्वामी रामानन्द

के शिष्य बैठे हुए थे। कबीर साहिब ने पूछा 'गुरु रामानन्द जी कहाँ हैं? मैं उनसे दीक्षा लूँगा।' शिष्यों ने कहा 'अरे! तेरी क्या बिसात? कहाँ चींटी, कहाँ हाथी। तू एक जुलाहे का लड़का है। वह तुझे दीक्षा नहीं देंगे।' कबीर साहिब ने कहा 'मुझे तो दीक्षा लेनी है। मुझे बताओ कि वह इस समय कहाँ है?' शिष्यों ने कहा 'स्वामी जी इस समय तुझे नहीं मिल सकते, वह समाधि में बैठे हैं।' कबीर साहिब ने कहा 'तुम झूठ बोलते हो। वह समाधि में नहीं बैठे हैं। वह तो बाजार में एक चमार की दुकान पर जूते का मोल कर रहे हैं।' शिष्यों को बड़ा क्रोध आया उन्होंने कबीर साहिब को एक तमाचा मारा। कबीर साहिब छोटे बच्चे थे, बिलख-बिलख कर रोने लगे। स्वामी रामानन्द जी ऊपर बैठे हुए, सब सुन रहे थे। वह नीचे उतर कर आये और कबीर साहिब को गोद में उठा लिया और खूब प्यार किया। स्वामी रामानन्द ने अपने शिष्यों से कहा 'मुर्खो! तुमने इस बच्चे को बेकार में ही दु:ख दिया। वह बच्चा तो पिछले जन्म का कोई महात्मा है। यह सच कह रहा है। कल मैं जूते खरीदने के लिए बाज़ार गया। चमार की दुकान पर जूते का सौदा बना नहीं, इसलिए इस समय वही ख्याल समाधि में आ रहा था।' तो इस प्रकार कबीर साहिब ने भी काल के नियमों का पालन किया। क्योंकि उन्होंने इस घटना के बाद गुरु रामानंद जी से दीक्षा ली।

कबीर साहिब ने जीवन भर लोगों को चेताया, ज्ञान दिया उन्होंने चमत्कारी जीवन व्यतीत किया। जब कबीर साहिब का इस दुनिया से जाने का समय आया, तो उन्होंने सोचा कि वे भी काल के

जगत् में रहते हैं इसलिए शरीर तो छोड़ना ही है। इसलिए उन्होंने यह निश्चय किया वह खुशी के साथ चोला त्याग देंगे। वैसे आजकल की रिसर्च भी बताती है कि मरने वाले को दु:ख नहीं होता बल्कि आनन्द मिलता है। कबीर साहिब ने सोचा कि उस समय के लोगों को एक वहम था उसके मुताबिक यह समझा जाता था कि जो काशी में मरता है वह स्वर्ग जाता है, जो मगहर में मरता है वह नरक में जाता है। कबीर साहिब यह सिद्ध कर देना चाहते थे कि वह केवल वहम ही है और कुछ नहीं है। सद्गुरु वक्त हमेशा क्रान्तिकारी होता है। वह एक नयी चीज़ बताता है, जिसे आम आदमी स्वीकार नहीं करता। कबीर साहिब ने कहा 'मालिक तो सब जगह व्याप्त है। अगर मैं सच्चा भक्त हूँ तो मालिक मुझे मगहर में शरीर छोड़ने पर भी परमधाम ले जायेगा।' कबीर साहिब मगहर आये और कुछ दिन रहे। अब अन्त समय आया तो चादर ओढ़ कर लेट गये और शरीर को त्याग दिया—

ज्यों की त्यों रख दीन्ही चदरिया।

इस घटना के बाद कबीर साहिब के हिन्दु और मुसलमान अनुयायियों में इस बात पर झगड़ा हुआ कि क्या उनके शरीर को जलाया जाये या दफ़नाया जाये। हिन्दु कहते थे कि हम कबीर साहिब का दाहकर्म संस्कार करेंगे। मुसलमान कहते थे कि वे उनके शरीर को दफनायेंगे। उसी समय कबीर साहिब का रूप प्रकट हुआ और उस रूप ने कहा- 'मुर्खो! झगड़ा मत करो। पहले चादर हटा कर देखो तो सही कि मेरे शरीर का क्या हुआ?' जिस समय चादर को हटाया गया

तो सब हैरान हुए क्योंकि वहाँ पर मृत शरीर के स्थान पर फूल ही फूल थे। आधे फूल हिन्दुओं ने ले लिये और आधे मुसलमानों ने। हिन्दुओं ने उन्हीं फूलों पर कबीर साहिब की समाधि बनवाई और मुसलमानों ने उसी समाधि के साथ ही मक़बरा बनवाया। इस काल के जगत् में आकर प्रत्येक मनुष्य को काल के नियमों के मुताबिक चल कर शरीर त्यागना पड़ता है। दाता दयाल जी महाराज ने इसी सच्चाई को बयान करते हुए कहा है—

दरपेश सबके वास्ते, मंज़िल अजीब है।

ग़ाफ़िल बाहोशबाश, अजल अनकरीब है॥

हर व्यक्ति के लिए मृत्यु तो निश्चित है, लेकिन अजीब इसलिए है कि लोगों को पता नहीं है कि उसका स्वरूप क्या है?

उतते कोई न आइया, जासे पूछूँ जाय।

इतते सब कोई जात है, भार लदाय लदाय॥

उत का मतबल है- दयाल देश, निजघर, निजधाम, जहाँ से हम आये हैं वहाँ पर द्वन्द्व नहीं है। जगत् द्वन्द्वात्मक है, अर्थात् जगत् में दोपना है। लेकिन निजधाम में न द्वन्द्व है, न झगड़ा है, न संघर्ष है। इसलिए वहाँ जो जाता है, वहीं का हो जाता है, फिर इस जगत् में वापिस नहीं आता। इसका मतलब यह नहीं है कि पुनर्जन्म नहीं होता। पुनर्जन्म तो सन्त का नहीं होता। आम आदमी का तो पुनर्जन्म होता है। आम आदमी मरने के बाद आनन्दमय-कोष तक जाकर, वापिस

लौटता है। इसलिये वह उतते नहीं आया।

उतते कोई न आइया, जासे पूछूँ जाय।

इतते सब कोई जात है, भार लदाय लदाय॥

यहाँ से सब लोग अच्छे और बुरे कर्मों का बोझ लाद-लाद कर जाते हैं। अच्छे कर्मों का भी बोझ ही होता है। अधिकतर लोग पूजा-पाठ, यज्ञ आदि करते हैं। यह अच्छे कर्मों का भार है। अच्छे कर्मों से इस दुनिया में अच्छा जन्म मिलेगा, मगर वह परमधाम को नहीं जायेगा। सनातन धर्म की यह बात समझने वाली है। कबीर साहिब ने सनातन धर्म का कभी भी विरोध नहीं किया। सन्त मत तो सनातन धर्म की आख़िरी सीढ़ी है। जैसे आखिरी सीढ़ी में नीचे सब सीढ़ियाँ मौजूद हैं, वैसे ही सरल व सहज शब्दयोग में, और सभी योग मौजूद हैं। इसलिए उस राधास्वामी मत में, जिसे हम मानवता धर्म कह सकते हैं- सभी सीढ़ियाँ मौजूद हैं। जो आख़िरी सीढी है वह इतनी सहज है कि उसके लिए किसी विशेष प्रकार की बुद्धि की, किसी ज्ञान की ज़रूरत नहीं है। यह आसान तरीका है, सहज तरीका है, लेकिन लोग आसान रास्ते पर चलने के लिए तैयार नहीं है। कलियुग में शब्दयोग या सुरत-शब्दयोग जिसे नाम योग भी कह सकते हैं, सबसे आसान तरीका है। नाम क्या है? नाम है शब्द। शब्द का आविष्कार सन्तों ने नहीं किया। यह पहले से ही मौजूद था। इसी प्रकार परमधाम, दयाल देश का भी सन्तों ने आविष्कार नहीं किया।

परमधाम तो कबीर साहिब के आने से पहले भी मौजूद था

सत्पुरुष भगवान् कृष्ण ने अर्जुन को कहा, 'हे अर्जुन! जहाँ पर न सूर्य चमकता है, न चन्द्रमा चमकता है, वह मेरा परमधाम है।' कौन कहता है कि भगवान् कृष्ण काल के अवतार थे? कृष्ण तो दयाल हैं और दयाल धाम की तरफ़ इशारा कर रहे हैं। उस धाम पर पहुँचने के लिए दुनिया के सारे बन्धन, रीति-रिवाज़, सारे कर्मकाण्ड बेकार हैं। भगवान् ने दूसरे शब्दों में अर्जुन को कह दिया—

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज।

अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच॥

अर्थात् ' हे अर्जुन! तू सभी धर्मों को, सभी कर्मकाण्डों को छोड़कर सिर्फ मेरी शरण में आ जा। तू केवल शरणागत हो जा, मैं तुझे सभी बन्धनों से मुक्त कर दूँगा।' आख़िरी मंजिल क्या है? जो रास्ते में रुकावटें हैं, जैसे अन्नमय कोष, प्राणमय कोष, विज्ञानमय कोष, हिरण्यगर्भ (शिव भी नहीं), आनन्दमय कोष अर्थात् आत्मा भी नहीं, इन सब पर्दों को हटाकर, निजस्वरूप में चले जाना, अपने इष्ट में विलीन हो जाना ही आख़िरी मंज़िल है। कबीर साहिब ने परमतत्त्वाधार की तरफ इशारा किया है।

सखिया वा घर सब से न्यारा।

जहाँ पूरन पुरुष हमारा॥

जहाँ नहीं सूरज और चाँद नहीं,

बिन ज्योति उजियारा।

जहाँ नहीं सुख-दुःख झूठ साँच नहीं,

पाप न पुण्य पसारा॥

यहाँ पर कबीर साहिब ने हमारी अपने अन्दर की पूर्णता को बताया है। वहाँ बिना ज्योति के प्रकाश होता है। इस जगत् के अन्दर सच भी है और झूठ भी है। दुनिया के अन्दर कोई जगह नहीं है, जहाँ चालाकी न हो, चारसौ बीसी न हो। यहाँ पर रिश्वत देकर टैक्स माफ करा लिया जाता है। मेरा एक शिष्य है मोती चन्द गोलच्छा। वह अपनी हिम्मत से करोड़पति बना है। इस समय अरबपति है। उसके नगर में इन्कमटैक्स एक सवाल करता हूँ। हमें तो आप कहते हो कि टैक्स का पैसा दो और आप स्वयं बेईमानी करते हो। आप एम.पी., एम.एल.ए. आदि की जाँच-पड़ताल क्यों नहीं करते, जो इतना पैसा खर्च करते हैं। मैं सरकार को पूरा टैक्स नहीं देता। मैं दो रजिस्टर रखता हूँ। मैं आपको सच कहता हूँ कि सभी ऐसा करते हैं। मनुस्मृति में लिखा है कि जो राजा सोलह प्रतिशत से अधिक टैक्स लेता है, वह चोर है। इसलिए तुम चोर हो।' कमिश्नर ने हाथ जोड़कर कहा 'इस बात का जवाब कोई मिनिस्टर ही देगा, मैं नहीं दे सकता।' मैं यह नहीं कहता कि दुनिया के अन्दर आप झूठ मत बोलो। यदि तुम वकील को सच-सच बात बता दोगे, तो वह टैक्स माफ करवाने का तरीका बता देगा क्योंकि वह तरकीब जानता है। इसी प्रकार, सद्गुरु भी कर्मों के टैक्स का वकील है। व्यक्ति को कर्मों का टैक्स देना पड़ता है। किसी को ज्यादा और किसी को कम। आप सद्गुरु के सामने सच कह दो,

वह तुम्हें बचा लेगा। इसमें घबराने की बात नहीं है। लोग कहते हैं कि वे बहुत दुखी हैं। अरे! तुम से भी ज्यादा दुखी और लोग हैं। सोचो! जो ज़्यादा कर्मों को टैक्स दे रहे हैं, उनकी क्या हालत है? इस जगत् में झूठ और सच दोनों चलते हैं। सच बोलना और बात है, सच में रहना और बात है। इसलिए कबीर साहिब ने कहा—

जहाँ नहीं सुख दुःख, झूठ साँच नहीं,

पाप न पुण्य पसारा।

उस देश में न पाप है, न पुण्य है। उस देश को जाने का रास्ता बिलकुल ही सीधा और सच्चा है। वह रास्ता है 'शब्दयोग', शब्दयोग सद्गुरु बतायेगा। एक बात ध्यान देने की है, जो लोग दुनिया से कर्मों का बोझ लाद कर जाते हैं वे सद्गुरु नहीं हैं। इन पाँच छः सालों में मैंने देखा कि जो सन्त कहलाते हैं, वे भी झूठ बोलते हैं। कोई अपने नाम के लिए झूठ बोलता है, कोई पैसे के लिए। वह सन्त, सन्त नहीं है, जो नाम के लिए या पैसे के लिए काम करता है। ऐसे सन्त भी दुनिया से भार लदा कर जा रहे हैं। मैं उनको कहता हूँ 'तुम अपनी देखो। ऐसा काम मत करो, वरना तुम्हारी अपनी कमाई भी समाप्त हो जायेगी।' इधर से सब भार लदा-लदा कर जा रहे हैं। यदि हल्के जायेंगे, तो दूसरों को भी साथ ले जायेंगे। आगे कहा है—

उतते सद्गुरु आइया, जाकी बुद्धि मति धीर।

भव सागर के जीव को, खेह लगावे तीर॥

उधर से जो आया है, जिसके अन्दर सच्चा मालिक मौजूद है वह सद्गुरु है। सद्गुरु की क्या निशानी है? सद्गुरु की निशानी है 'जाकी बुद्धि मति धीर' उसकी बुद्धि स्थिर है, टिकी हुई है, अर्थात् वह हानि-लाभ, जय-पराजय, सुख-दुख, निन्दा-स्तुति के समय भी, अन्दर से मालिक के साथ जुड़ा रहता है। वह तो अभय है, निर्भय है, अमल है। अमल क्या है? अमल है बिना मल के। उसके ऊपर कर्मों का मल नहीं है। वह कर्म तो आपकी ही तरह करता है, लेकिन वह कर्म उसको बाँधता नहीं है। सच बात यह है कि लोग उसे मनुष्य के रूप में देखते हैं। अरे वह मनुष्य के चोले में अवश्य है, लेकिन कर्म उसको आम मनुष्यों की तरह बाँधते नहीं हैं। उसके ऊपर पाप-पुण्य का मल नहीं है। उसके लिए पाप-पुण्य, अच्छा-बुरा दोनों बेकार हैं। वह किसी को बुरा नहीं समझता। उसकी निगाह पैनी होती है। वह शरीर, मन, आत्मा के अन्दर से जो धार बह रही है, उसके साथ सम्बन्ध रखता है। वह किसी के अन्दर बुराई नहीं देखता। 'बुद्धि मति धीर' का मतलब है कि वह सबको परमतत्त्व का नमूना समझता है। उसकी मति एक जगह पर टिकी हुई है।

योग क्या है? योग अर्थात् सहज योग है कि आप एक मकसद में तन, मन, धन अर्थात् शरीर, मन आत्मा को लगा दें। जिस व्यवसाय में आप हो, उसी व्यवसाय के ही अन्दर आपको परमतत्त्वावतार सद्गुरु के साक्षात् दर्शन होंगे। परमदयाल जी महाराज को परमतत्त्व के दर्शन सत्संगियों के रूप में हुए। परमदयाल

जी महाराज ने कहा 'दयाल शर्मा! आख़िरी मंज़िल पर पहुँचने के लिए तुम मेरी जगह काम करना। तुम सबको सच्चा रास्ता सत्संग के ज़रिये बताना, तब तुम्हारा ज़िन्दगी का मकसद पूरा होगा।' सन्त का लक्ष्य है मालिक के साथ जुड़ना, इसलिए उसकी बुद्धि टिकी हुई है। जिसकी बुद्धि टिकी हुई है, वह मालिक के साथ जुड़ा हुआ है। जिसका कोई व्यवसाय नहीं है, उसका मन इधर-उधर बिखरा हुआ रहता है, वह मालिक के साथ नहीं जुड़ सकता। यदि दुनियावी तरक्की भी चाहते हो, तो तुम अपने कर्त्तव्य को आनन्द से निभाओ। अपने काम को खुशी से करो। काम को खुशी से करने का मतलब है कि तुम उसे आत्मा से कर रहे हो। आत्मा का लक्षण खुशी है। कुदरत तुम्हें आगे बढ़ायेगी। मेरा अपना जीवन मेरे सामने है।

जब मैंने बी.ए. पास किया था, उस समय अंग्रेज़ों का राज्य था। मैं क्रान्तिकारी विचारों का और गाँधी जी का समर्थक था। पिता जी अंग्रेजों के भक्त थे। वैसे मेरा और मेरे पिता जी का आपस में कोई विरोध नहीं था। केवल दृष्टिकोण का फ़र्क था। मेरे पिता जी अंग्रेजी व गणित के बड़े विद्वान् थे। अंग्रेज़ी में कविताएँ भी लिखते थे। जार्ज पंजम के पत्र पिता जी की प्रशंसा में आते थे। उनकी काफी प्रसिद्धि थी। अंग्रेज़ अधिकारियों ने मेरे पिता जी को कहा था 'आपका लड़का जब बी.ए. पास कर लेगा, तब इसे तहसीलदार बना देंगे। दूसरे साल यह मैजिस्ट्रेट हो जायेगा।' मैंने मना कर दिया। मैं कहा 'मैं गुरु ख़ानदान में पैदा हुआ हूँ, मेरा व्यवसाय पढ़ने-पढ़ाने का है। मुझे यह

काम नहीं चाहिए।' मैं एक लक्ष्य पर टिका रहा। जब देश को आज़ादी मिली तब मैंने सरकारी नौकरी की। सरकारी नौकरी भी यह देखने के लिए की कि नौकरी होती क्या है? सरकारी नौकरी में मेरा मन नहीं लगा। वैसे मैं जो भी इच्छा करता था, वह पूरी हो जाती थी। इसका कारण था कि कोई भी दिन ऐसा नहीं था, कि जिस दिन मैं मालिक के साथ समाधि में न जुड़ा होऊँ। मेरे मन में आया कि लाहौर छोड़कर मैं अपने शहर मुलतान चलूँ। मैं मुलतान आया। वहाँ राशनिंग आफ़िसर की जगह खाली थी। मैंने अर्जी दी और मैं राशनिंग आफिसर हो गया। मेरा काम था- राशन खरीदना और सप्लाई करना, मेरा दृष्टिकोण बेईमानी का नहीं था। दूसरे लोग बेईमानी से बहुत पैसा कमाते थे। मैंने सोचा कि मैं इस जगह के लिए उपयुक्त नहीं हूँ। उसी समय डी.ए.वी. कालिज में दर्शनशास्त्र पढ़ाने वाला कोई नहीं था। कालिज की सारी मैनेजिंग कमेटी मेरे पास आयी। उन्होंने कहा 'आप कालिज में दर्शनशास्त्र पढ़ा दीजिये।' तनख्वाह तो कम होगी, लेकिन यह काम बहुत अच्छा है। इसमें कुर्बानी देनी पड़ती है।' मैंने कहा 'आपको सोच कर जवाब दूँगा।' सभी लोग चले गये। दूसरे दिन राशनिंग कण्ट्रोलर मेरे पास आया। कहने लगा 'शर्मा जी! हम ग़ोदाम देखने चलें।' मैंने कहा 'चलिये'। हम गोदाम देखने चले गये। राशनिंग कण्ट्रोलर ने कहा- शर्मा जी। आप इन बोरियों में कंकर, मिट्टी का पता कैसे लगाते हैं? मैंने बताया- बोरी में सूआ चुभा कर, थोड़ी गेहूँ निकाल कर देख लेते हैं। उसने कहा- बोरी नीचे रखो। उसने बोरी के

अन्दर अपनी पूरी बाजू डाल कर निकाली और कहने लगा, देखो इस प्रकार मिट्टी देखी जाती है। मैंने सोचा अरे तूने बी.ए. पास क्या इस मिट्टी को देखने के लिए किया था? यह काम तो कोई और भी कर सकता है। मैं घर वापिस आ गया। दूसरे दिन उस कालिज के प्रिंसीपल मेरे पास आये। उन्होंने मुझसे बड़ी नम्रता से कहा- यह पब्लिक का कालिज है। आप इसमें पढ़ायें। लोगों की भलाई होगी। मुझे बाद में पता लगा कि दाता दयाल जी महाराज ने भी डी.ए.वी. कालेज में पढ़ाया था। दूसरे दिन मैंने राशनिंग आफिसर के पद से त्यागपत्र दे दिया। मैंने कहा कि मैं कालिज में पढ़ाऊँगा। राशनिंग कण्ट्रोलर जानता था कि मैं ईमानदार आदमी हूँ। उसके कहा 'मैं आपको रोकना नहीं चाहता, लेकिन जब तक मुझे अच्छा आदमी नहीं मिल जाता, आप कालिज में भी पढ़ाओ और यहाँ भी काम करो।' मैं आपको बता रहा हूँ कि मैंने जो भी काम किया वह खुशी से किया। अब मैं डी.ए.वी. कालिज में प्रोफैसर हो गया। अब देखो कुदरत क्या करती है? मार्च 1946 में बड़े दंगे हुए, क्योंकि 15 अगस्त 1947 को आज़ादी मिलनी थी। मुस्लिम लीग के नेता मुसलमान थे। उन्होंने निश्चय कर रखा था कि मुलतान से हिन्दुओं का मार-मार कर निकाल देंगे। मार्च 1947 में मैं कालिज में पढ़ा रहा था। कॉलिज के छात्रों ने कहा कि हम जलूस निकालेंगे। मुझसे प्रिंसीपल ने कहा- आप शहर में उस जगह चले जाओ, जहाँ इस जलूस को पहुँचना है। मैं उस जगह पहुँच गया, जहाँ जलूस को पहुँचना था। जब जलूस

शहर से गुज़रा तो मुसलमानों ने आक्रमण कर दिया और उस गोदाम को आग लगा दो, जिसमें मैं काम करता था। उस गोदाम में राशनिंग आफिसर तथा अन्य लोगों को ज़िन्दा जला दिया। यदि मैं कालिज में पढ़ाने नहीं जाता तो उस समय मुझे गोदाम में ही होना चाहिए था। कुदरत ने ही मेरी रक्षा की। मैंने अपने मकसद को नहीं छोड़ा। इसलिये जहाँ भी रहो, खुशी से काम करो। कुदरत तुम्हारी मदद करेगी। महाराज जी से मैंने कुछ नहीं माँगा। इसलिए उन्होंने मुझे अपने आपको दे दिया। उन्होंने कहा 'मानव! वह समय आने वाला है, जब बहुत से लोग तुम्हारे साथ होंगे। दुनिया में कठिनाइयाँ होंगीं, तकलीफें आयेंगी, तब लोग मालिक की तरफ दौड़ेंगे। तू मेरी जगह काम करना।

मैं स्वयं समाधि में रहता हूँ और दूसरों को सहज समाधि का रास्ता बताता हूँ। सद्गुरु का जीवन अमल होता है। उस पर कर्मों का मल नहीं होता। मैं आपको बता रहा था कि भगवान् कृष्ण ने अर्जुन को कहा—

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।

अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षिष्यमि मा शुच॥

अर्थात्, केवल एक मेरी शरण में आ जा। तू मुझे लक्ष्य बना ले, तू सब बाधाओं से, सब मुसीबतों से बच जायेगा। तू कालदेश से निकलकर दयालदेश में चला जायेगा। तुम कालदेश में भी खुशी के साथ रहो, क्योंकि काल देश भी दयाल का है। अपना कर्त्तव्य खुशी से

निभाओ। यदि तुम्हें कालदेश से निकलना है तो तुम अविनाशी पिया की दुल्हन बनो। उस अविनाशी पिया की दुल्हन बनने की शर्त दाता दयाल जी महाराज ने आज के शब्द में बताई है—

मानुष जनम सुधार तू मेरी सुरत सुहागिन।

आप सभी सुहागिन हो। महाराज जी आपको कई बार कहते थे- आपको विधवा छोड़कर नहीं जा रहा, सुहागिन छोड़ कर जा रहा हूँ, क्योंकि मैं आपको सच्चा ज्ञान बता रहा हूँ। इस ज्ञान के मुताबिक तुम जिस माहौल में हो- अपने अविनाशी पिया की दुल्हन बने रहोगे। तुम हमेशा के लिए सुख-दुःख, लाभ-हानि, जय-पराजय, निंदा-स्तुति के द्वन्द्वों से ऊपर उठ जाओगे। मनुष्य के जीवन में दो मार्ग हैं। यदि आप चाहो, अपनी संकल्पशक्ति को दुनिया में लगा दो और हर प्रकार के खान-पान ऐशो-आराम से रहो- लेकिन अन्त में आप यही सोचेंगे कि यह सुख स्थायी नहीं है। यह सब धोखा था। इसी को प्रेयत् का रास्ता कहते हैं। यह रास्ता शुरु में आसान तथा सुख देने वाला लगता है, लेकिन अन्त में तंग और कठिनाइयों से परिपूर्ण हो जाता है। दूसरा रास्ता श्रेयस् का है। यह रास्ता पहले मुश्किल लगता है, लेकिन बाद में वह इतना आसान तथा सहज हो जाता है कि कुछ भी करने-धरने की ज़रूरत नहीं होती। मनुष्य का जन्म सुधर सकता है। यदि मनुष्य-जन्म सुधरने योग्य नहीं होता, अर्थात् अविनाशी पिया की दुल्हन बनने योग्य नहीं होता, तो हम आपको चेताते ही नहीं। आप उसके योग्य हैं। अपने जन्म को सुधारो। अपनी धारा को राधा

बनाओ। यही बात दाता दयाल जी महाराज अपने शब्दों में कह रहे हैं–

मानुष जनम सुधार री, मेरी सुरत सुहानिग।

सुहागिन वह है, जो एक पति को मानती है अर्थात् जिसने एक निश्चय पकड़ लिया। आप किसी निर्बन्ध पुरुष के रूप को अपने ध्यान में रखो, वह आपको बहुत जल्दी ऊपर ले जायेगा। महाराज जी कहते थे कि किसी वीतराग पुरुष को अपनी खोपड़ी में रखो। उससे ताल्लुक पैदा करो। उसे परमतत्त्व मानकर प्यार करो। उसके साथ कोई रिश्ता कायम करो। वह आपको अपनी रेडिऐशन से, अपने शब्द से, शब्दयोग तक ले जायेगा–

पिया की शरण में जल्दी आजा।

चित्त धर प्रेम पियार तू॥

नश्वर पिया अर्थात् संसार के अस्थायी सुखों के पीछे लोग भागते हैं। मैंने आपको बताया कि आजादी के बाद अगर मैं आई.ए.एस. आफिसर हो गया होता, तो क्या मैं अपने मालिक से इतना प्यार कर सकता था? संसार में लोग फँसे हुए हैं, उनको समय नहीं मिलता कि वह अन्तर में अपने पिया ले मिलें। मेरा व्यवसाय भी यही पढ़ाना था कि मालिक क्या है? उसके साथ कैसे मिला जा सकता है? मैं गीता, बाइबिल, वेद, पुराण एञ्जील पढ़ाता था। छात्र-छात्राएँ कहते थे 'डा. शर्मा, आपने हमारी जिन्दगी पलट दी। मैंने

कभी भी छात्र-छात्राओं को यह नहीं कहा कि ईसाई धर्म को छोड़ दें या यहूदी धर्म को छोड़ दें। मैं तो उन्हें जिन्दगी का राज़ बताता था कि हरएक के अन्दर मालिक है। यदि मैं भी दुनिया के सुखों के रास्ते पर समर्पित नहीं हो पाता—

पिया की शरण में जल्दी आजा, चित्तधर प्रेम पियार तू।

जल्दी चेत जा। इसका मतलब यह नहीं कि तुम अपने व्यवसाय को छोड़ दो। अपने व्यवसाय में रहते हुए ही, उस मालिक से प्रेम करो। परम दयाल जी महाराज तो मेरे इष्टदेव थे। उन्होंने बड़ी दया कर अन्त समय में मेरे पास आकर चोला छोड़ा। वह यहाँ भी अपना चोला छोड़ सकते थे। लेकिन आख़िरी नसीहत देने के लिए ही मेरे पास यह अमेरिका आये। उन्होंने मुझ से अन्त में कहा 'प्यारे मानव! तुम भी मेरी तरह सत्संग द्वारा सत्संगियों को अपना अनुभव बाँटना। इससे तुम भी राधास्वामी अवस्था को एक दिन प्राप्त कर लोगे। यह रास्ता केवल प्रेम का है। प्रेम के रास्ते पर चलने के लिए ज्ञान-ध्यान की, किसी योग की, किसी साधना आदि की कोई जरूरत नहीं है। भक्ति क्या है? भक्ति है अपने आप को मिटा देना—

मिटा दे अपनी हस्ती को, अगर कुछ मर्तबा चाहे।

कि दाना ख़ाक में मिलकर, गुले गुलज़ार होता है॥

अपनी हस्ती को मिटाने का अर्थ है कि अपने शरीर के अहंकार को, मन के अहंकार को और आत्मा के भी अहंकार को मिटा

देना। 'मैं शब्दाभ्यासी हूँ' मिटा दो अर्थात् समाप्त कर दो। जब अहंकार समाप्त हो जायेगा तो आपका जीवन बीज की तरह गुले गुल्जार हो जायेगा।

मांग भरी भक्ति सिंदूर से, मांग परम सिंगार तू।

दुनियावी विवाह में पति अपनी पत्नी को हर प्रकार का सिंगार कराता है। मांग को सिंदूर से भरता है। अच्छे-अच्छे कपड़े, सुन्दर-सुन्दर ज़ेवर पहनाता है, लेकिन यह सिंगार परमसिंगार नहीं है। परमसिंगार वह है, जिसको दाता दयाल बता रहे हैं-

मांग भरी भक्ति सिंदूर से, मांग परमसिंगार तू।

यहाँ पर भक्तिरूपी सिंदूर से मांग को भरा जाता है। यही परमसिंगार है। उस मालिक को ही मांगो, जिसके लिए सभी हीरे-जवाहरात एक बूँदमात्र हैं। जब वह अविनाशी पिया मिलता है, तो दुनिया की किसी भी चीज़ की आवश्यकता नहीं रहती है। तब पता चलता है कि यह दुनिया एक ख्वाब है। बड़े दुख की बात है कि लोग भ्रम में पड़े हुए हैं। मैं आपको एक किस्सा सुनाता हूँ—

जब महाभारत का युद्ध समाप्त हुआ, तो विदुर अपनी यात्रा समाप्त करके धृतराष्ट्र के पास आये। महाभारत के युद्ध में सभी धृतराष्ट्र के घर वाले मारे गये थे। विदुर भक्त थे। विदुर ने देखा कि धृतराष्ट्र बहुत ग़मग़ीन थे। वह हर समय चिन्ता में रहते थे। विदुर को बड़ा दु:ख हुआ। उन्होंने धृतराष्ट्र से दु:खी रहने का कारण पूछा और

कहा 'महाराज! मैं आपको एक कहानी सुनाता हूँ।'

मैं यात्रा करते-करते एक दिन बड़े भयानक जंगल से गुजरा। यह जंगल झाड़ों तथा कांटों से भरा पड़ा था। भयानक जंगली जानवरों की आवाज़ें जंगल से आ रही थीं। मैंने उस जंगल में एक ब्राह्मण देखा। ब्राह्मण बड़ा दुखी था। वह जंगली जानवरों की आवाज़ें सुनकर घबरा जाता था। जब वह ब्राह्मण जंगल से बाहर निकलने की कोशिश करता था, तो उसके सामने एक डायन आ जाती थी और वह डायन के डर से फिर जंगल में चला जाता था। अचानक वह ब्राह्मण एक कुएँ में गिर गया। यह कुआँ बहुत गहरा था, जो झाड़-झंखाड़ और पेड़ों की ज़ड़ों से भरा हुआ था, इसलिये ब्राह्मण कुएँ में नीचे न जाकर बीच में ही अटक गया। ब्राह्मण ने नीचे देखा कि एक बड़ा अजगर मुँह फाड़े बैठा था। कुएँ के ऊपर एक भयानक हाथी था। उस ब्राह्मण की स्थिति बड़ी भयानक थी। यदि वह ऊपर जाये, तो हाथी मार देगा, और यदि वह नीचे गिरता है तो अजगर खा जायेगा। कुएँ के नीचे दो चूहे, जो काले और सफेद थे, पेड़ की जड़ों को काट रहे थे। ब्राह्मण के ऊपर मधुमक्खियों का एक छत्ता था। मक्खियाँ उसे काटती जा रहीं थीं। लेकिन उस छत्ते से कभी-कभी शहद की एक बूंद टपक जाती थी, जिसे चाटकर वह ब्राह्मण आनन्द और सुख का अनुभव करता था, और सारे दुख भूल जाता था। विदुर ने कहा- महाराज! मुझे उस ब्राह्मण पर बड़ी तरस आती है। वह बड़े दुख की अवस्था में है। धृतराष्ट्र ने कहा- विदुर! मुझे यह बताओ कि वह ब्राह्मण कौन है? मैं

उसकी मदद करना चाहता हूँ। विदुर ने कहा महाराज। वह ब्राह्मण कोई भी हो सकता है। मैं भी हो सकता हूँ और आप भी हो सकते हैं। यह कहानी क्या है ? मैं आपको बताता हूँ। हम इस संसार रूपी जंगल में आये हुए हैं। जहाँ हमारा कोई नहीं है। जिसकी भी मदद करोगे वह बाद में धोखा दे जायेगा। इस जंगल में आपको समाप्त करने के लिए दरिन्दे हैं। इधर हम झाड़-झंखार रूपी वासनाओं में फँसे हुए हैं। कुएँ के बाहर कर्मरूपी हाथी है। कुएँ के नीचे मौत अजगर के रूप में मुँह फाड़े हैं। दो काले सफेद चूहे अर्थात् रात और दिन हमारी जिन्दगी को काट रहे हैं। जंगल के बाहर वृद्धावस्था डायन के रूप में डरा रही है। मक्खियाँ तुम्हें काट रही हैं। उस छत्ते से टपकने वाले शहद की बूँद से तुम सुख का अनुभव करते हो अर्थात् संसार के अन्दर यदि एक क्षण का भी सुख मिल जाता है, तो तुम दुनिया के सब दुख भूल जाते हो और इसी संसाररूपी जंगल में फँसे रहते हो। महाराज! वह ब्राह्मण स्वयं ही फँसा रहना चाहता है। आप किसकी मदद करेंगे ?

इस संसाररूपी जंगल में छुटकारा पाने के लिए ही हमें सद्गुरु की शरण में जाना पड़ेगा। वह मालिक ही हमें इस जंगल से निकाल सकता है।

क्षमा की चूनरी दया की साड़ी, पहन के चल दरबार तू।

यहाँ पर ज़री या बनारसी साड़ी की आवश्यकता नहीं है। यहाँ पर आवश्यकता है क्षमा की चूनर और दया की साड़ी की। यदि तुम किसी अपराधी को क्षमा करते हो, उस पर दया करते हो, तो

दयाल भी तुम्हारे कसूरों को क्षमा करके, तुम्हारे ऊपर दया करेगा। यदि तुम्हें दयाल के दरबार में जाना है, तो पहले दयाल बनो। आप दूसरों के कसूरों को क्षमा करते हुए, दूसरों पर दया करते हुए, प्रेम के रास्ते पर चलो, तब आपको सब कुछ मिलेगा। स्वामी जी महाराज ने भी कहा है 'कोमल चित्त दया मन धारो।' तब आप इस रास्ते पर आओ।

पिया महल का सुख आनन्द ले, डार जगत सिर छार तू।

जब आप दूसरों पर दया करोगे, दूसरों की भलाई करोगे, तब ही पिया के महल का आनन्द आपको मिल सकता है। दूसरों की भलाई करने से आपकी स्वयं भलाई हो जायेगी। 'दुनिया में अगर कोई रिश्वत लेता है, तो वह पिया के महल का सुख, आनन्द नहीं ले सकता है। इसलिए तुम अपने सच्चाई के रास्ते पर दृढ़ रहो। 'डार जगत सिर छार तू' दुनिया की बातों पर, दुनिया पर धूल फैंको। तुम तो केवल अपने पिया के साथ प्यार करो और सुख से रहो-

राधास्वामी साचे प्रीतम, चरन कमल हिय धार तू।

राधास्वामी परमतत्त्व का नाम है। तुम अपने इष्ट के साथ प्रेम करो, उसके चरणकमलों को अपने हृदय में रखो। चरणकमल का हृदय में रखने का मतलब है अहंकार को समाप्त कर देना। सब कुछ उसी पर न्यौछावर कर देना। यह रास्ता आसान इसलिये है कि यह नेति का नहीं एति का मार्ग है अर्थात् 'ना' का रास्ता नहीं, 'हाँ' का रास्ता है। कोई संन्यासी या त्यागी यदि ज्ञानी बन जाये और कहेकि यह

जगत्, सत, रज, तम अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु, शिव कुछ नहीं है, तो बात दूसरी है। परन्तु उसको कुछ और समझ कर कहे कि दुनिया कुछ नहीं है और इस दुनिया से अलग ही रहे, तो यह बात गलत है क्योंकि दुनिया से अलग नहीं रहा जा सकता। यदि उसे यह ज्ञान है कि ब्रह्मा, विष्णु और शिव भी तो उसी का रूप हैं और मनुष्य भी उसी मालिक का स्वरूप है, तो फिर वह दुनिया से भागेगा नहीं, बल्कि दुनिया से प्रेम करेगा। असली ज्ञान वह है, जिसको सबके अन्दर मालिक दिखाई दे।

अब आदमी कुछ और हमारी नज़र में है।
जब से सुना है यार, लिबासे बशर में है॥

परमतत्त्वाधार जब लिबासेबशर में आता है, तभी उसके साथ प्रेम हो सकता है। दुनिया से अगर आप निजधाम में जाना चाहते हो, तो आपको किसी स्थूल चीज़ से लगाव नहीं होना चाहिए। दुनिया को छोड़ना बड़ा मुश्किल है। करोड़ों में से एक आदमी ज्ञान के रास्ते से वहाँ जाता है, पर सहज रास्ता प्रेम का है। राधास्वामी मत अर्थात् मानवता धर्म हाँ में ना करता है। वह अपने पिया को अर्थात् सद्गुरु को ऐसा प्यार करता है कि सब कुछ उसे दे देता है। हर चीज़ देने से त्याग आ जाता है। प्रेम के रास्ते पर चलने से काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार, सब अपने आप समाप्त हो जाते हैं। इस सहज रास्ते में सद्गुरु को ही इष्ट मानना है। उसकी शरण में आना है। वह सबका आधार है। ऐसा करने से तुम त्यागी हो जाओगे। इस जगत् में रहते हुए

घर-गृहस्थ चलाते हुए तुम उसमें फँसोगे नहीं। यह सहज मार्ग है। सद्गुरु का व्यवहार देखने में तो मनुष्य जैसा ही होता है, लेकिन वह अमल होता है। उसके ऊपर मल नहीं चढ़ा हुआ होता। उसका प्यार तुम्हारे घर के दूसरे प्यार में बाधा नहीं डालता, बल्कि उसकी वृद्धि करता है। तो यह है सन्तमत का मार्ग, अर्थात् मानवता का मार्ग। आज मैंने इस पर बहुत कुछ कह दिया। इसके साथ ही आज का सत्संग समाप्त करता हूँ।

सबको राधास्वामी!

सूचना

सभी दानी सज्जनों, सत्संगियों से अनुरोध है कि जो धनराशि मानवता मन्दिर, होशियारपुर में भेजना चाहते हैं, उनकी सुविधा के लिए हम Punjab National Bank, Hoshiarpur के दो Account Numbers दे रहे हैं। इच्छुक सत्संगी Faqir Library Charitable Trust A/c No. 0206000100057805, IFSC Code-PUNB0020600 और Manavta Mandir Hoshiarpur A/c No. 0206000100209756, IFSC Code-PUNB0020600 में जमा करवा सकते हैं। कृपया जो भी राशि जमा करवायें उसकी रसीद की एक कॉपी अपने पत्र के साथ मंदिर कार्यालय में भेज दें अथवा सूचित कर दें, ताकि दानी सज्जनों की सूची में उनका नाम प्रकाशित किया जा सके तथा रसीद भी भेजी जा सके।

सचिव,
फ़कीर लाईब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट, होशियारपुर।

सत्संग

परमसन्त हजूर
दयाल कमल जी महाराज

(19.5.2019)

राधास्वामी!

जेठ के महीना आप सबको मुबारक हो। लम्बे दिन हैं आपकी उम्र लम्बी हो। रात को ठण्डक होती है आपके दिल को ठण्डक मिले। आपको दिन की गर्मी बिल्कुल न लगे। आपका मन शान्त रहे। इस महीने गर्मी बहुत होती है अगर मन शान्त रहे तो गर्मी महसूस नहीं होती।

ये जग कोठी काठ की, ज्यों तिस लगी आग,
भीतर रहे सो जलन हुए, साधु उभरे भाग।

कबीर भक्ति सफल हैं जो गुरु मिले फकीर,
संशय भ्रम निर्वया कर निर्मल करे शरीर।

नथ खसम हथ ऋग टकै टेक,
जहाँ दाना वहाँ खाना नानका सच एक।

मैंने यहाँ तीन बातें कही। मैं बैसाखी के बाद मन्दिर में आज आया हूँ। कुदरत का ऐसा खेल बना पहले मुझे यू.पी. जाना पड़ा। वहाँ से बार-

बार सन्देश आ रहा था कि महाराज जी जरूर आओ। वहाँ से आकर अभी कपड़े ही धुलवा रहा था कि राजस्थान से फोन आ गया कि आप ने यहाँ परसों पहुँचना है। मैंने पूछा सब ठीक-ठाक है। हाँ जी सब ठीक-ठाक है पर आपने परसों यहाँ आना है। मैंने कहा, कहाँ राजस्थान और कहाँ मैं हिमाचल में बैठा हुआ हूँ, मैं कैसे परसों पहुँचूँगा। आप अपना पता भेज दें हम हवाई-जहाज की टिकट भेज देते हैं। मैं चला गया।

उस मालिक ने हम जिनके बच्चे हैं उसने हमें कोई दुख नहीं दिया है। जो उस मालिक को दोष देते हैं कि उसने दुख दिया उसने यह किया ये बिल्कुल गलत कहते हो। जो भी तुम्हें दु:ख-सुख मिलता है वह तुम्हारे अपने ख्याल हैं, तुम्हारे अपने विचार हैं। तुम्हारा अपना किया हुआ तुम्हें मिल रहा है। ये, मैं तुम्हें अपनी जिन्दगी का नुक्ता बता रहा हूँ। जो कुछ भी तुम्हें मिलता है अच्छा या बुरा वह तुम्हें तुम्हारे कर्म का फल मिल रहा है। वह कर्म दो चीजों से पैदा हुआ- तुम्हारा ख्याल व तुम्हारी नीयत यही तुम्हारे लिए हर चीज पैदा करता है। मैं बहुत लोगों से मिलता हूँ सबके पास अपना अपना दुखड़ा है। वह दुखड़ा क्यों आया? वह दुखड़ा आयेगा क्योंकि हमें हमारा गुरु नहीं मिला। कबीर साहिब ने तो पाँच सौ वर्ष पहले ही फकीर को इंडिया भेज दिया-

जो फकीर की भक्ति में आयेगा, उसके दुख क्लेश, संशय सब दूर हो जायेंगे और मन निर्मल हो जायेगा। मैं वह भाग्यशाली हूँ जिसको ये नियामत मिली मेरे सद्गुरु से कि ये दुनिया है क्या। तीसरी बात- 'नथ खसम हथ'। मुझे यू.पी. जाना पड़ा कोई ख्याल नहीं था, राजस्थान जाना पड़ा मुझे कोई ख्याल नहीं था। जब-जब मेरे दाता आते थे तो कहते थे

बच्चा- **'कौन किसी ले आवे-जावे, दाना पानी खींच के लयावे'।**

हमारी सोच ठीक नहीं है हमारी संगत ठीक नहीं है, हमारा खाना ठीक नहीं है हमारा कर्म ठीक नहीं है तो हम सुखी कैसे हो सकते हैं ?

मैं कहता हूँ तुम सबसे पहले अपना ख्याल करते हो दूसरों का ख्याल नहीं करते। दूसरों का भला चाहो तुम्हारा अपना भला हो जायेगा। तुम दूसरों का बुरा चाहते हो तो तुम्हारा भला कैसे होगा। किसी ने न स्वर्ग देखा है, न नरक देखा है। कबीर साहिब ने बता दिया कि-

उतते कोई न आइया, जासे पूछूँ जाय।
इतते सब कोई जात है, भार लदाय लदाय॥

हम कर्मों का भार लेकर जाते हैं। वहाँ से आकर किसी ने कुछ नहीं बताया। यहीं सब कुछ है और यहीं से हम अपने कर्म लेकर जाते हैं।

वो भाग्यशाली हैं जिन्हें मानव-जीवन में कोई गुरु मिल जाये, कोई परमदयाल मिल जाये, कोई सुलझा हुआ संत मिल जाये, निस्वार्थ संत मिल जाये फिर तुम्हारा भी कल्याण हो सकता है बशर्ते कि तुम्हारे अन्दर सच्चाई हो, तुम्हारे अन्दर demand हो। demand है तो supply होगी ही। यदि demand नहीं है तो supply भी नहीं है। तुम अच्छी इच्छा करो, सबके भले की इच्छा करो, तुम्हारा भला अपने-आप हो जायेगा। हम सब अपने ही ख्लाल से अपने-आपको जला रहे हैं। हम अपने ही विचार से कोई न कोई शत्रु बना लेते हैं, किसी को मित्र बना लेते हैं, किसी को अपना बना लेते हैं, किसी को पराया बना लेते हैं जबकि यहाँ न कोई अपना है न कोई पराया है। अगर है तो सभी अपने हैं अगर नहीं तो कोई भी अपना नहीं है।

आज जेठ महीना था। इस जेठ महीने पर स्वामी जी महाराज ने जो कहा है उसको लेंगे। गर्मी का मौसम है क्योंकि गर्मी में खाना भी ज्यादा नहीं खाया जाता तो सत्संग भी ज्यादा नहीं होना चाहिए उतना ही लो जितना पच जाये।

गुरु भक्ति क्या है ? उसमें कोई सन्देह नहीं होना चाहिए। **'गुरु जो कहे उसको कर ध्यान, गुरु जो कहे उसे हित कर मान'** तुम मुझे गुरु मानो या न मानो मैं कुछ भी नहीं हूँ। करने वाली वो हस्ती है मैं तो कुछ भी नहीं कर सकता। करने वाली ताकत मेरे सद्गुरु की ताकत है जो सब कुछ करवा रही है। तुम दूर-दूर से इस गर्मी में आते हो मन्दिर को पैसे भी देते हो, कष्ट उठा कर आते हो, तो तुम्हारी इच्छा पूरी होनी चाहिए। अगर इच्छा पूरी नहीं होती तो मैं अपने-आप से पूछता हूँ कि क्यों नहीं पूरी हुई। कहीं न कहीं कमी है। कमी यह है कि हम एक साथ में एक चीज़ नहीं माँगते, दो-तीन माँग लेते हैं ये भी हो जाये और वह भी हो जाये। जिन्दगी में एक चीज माँग लो जब वह पूरी जाये तो फिर दूसरी माँग लो। लगातार सब कुछ मत माँगो। फिर मुश्किल हो जाती है। स्वामी जी महाराज कह रहे हैं-

जेठ महीना जेठा भारी,
जीवन हिरदे तपन करारी।

यह जेठ का महीना है। गर्मी है। जीव के हिरदे में बड़ी भारी तपन है। क्या तुम्हारे हृदय में तपन है ? है, वह कौन सी तपन है वह मैं आपको बता देता हूँ वह अगली पंक्ति में है-

जेठ महीना जेठा भारी,जीवन हिरदे तपन करारी।

संत दयाल जीव हितकारी, भेद कहें अब निज कर भारी॥

अब वह फरमा रहे हैं कि गर्मी है और जीव के हृदय में भी बहुत बड़ी तपन है। संत इस महीने के बारे में अपने जीवन का निजी अनुभव बताते हैं कि हृदय में तपन क्या है- आशा, कामना, इच्छा। ऐसा कोई नहीं है जिसके हृदय में इच्छा नहीं है। केवल एक संत है जिसकी इच्छा खत्म हो जाती है, वह कहता है- **नथ खसम हथ।** वह उस परमात्मा पर छोड़ देता है अपना कोई विचार नहीं करता। अगर विचार करता है तो गुरु की वाणी का विचार करता है, गुरु की शिक्षा का विचार करता है। अगर ध्यान करता है तो गुरु के रूप का ध्यान करता है और उसके अन्दर कुछ भी नहीं होता। इसलिए संत हमारे रूप में आए, शरीर के रूप में आए, मानव रूप में आए ताकि तुम्हारे आमने-सामने बैठकर बात कर सकें और अपना निज अनुभव बताते हैं कि यह तपन हमें क्यों तंग कर रही है। हम क्यों इस तपन में दुखी हैं। किसी को रात को नींद नहीं आती, किसी को कोई चिन्ता सता रही है। मुझे बहुत से ऐसे लोग मिलते हैं- बाबा जी रात को नींद नहीं आती। नींद कैसे आये जब तुम्हारा मन स्थिर नहीं है, मन ठहरा नहीं है तो मन को कैसे नींद आयेगी? अगर भुख लगी है तो रोटी नहीं खाओगे तो बेचैन हो जाओगे, प्यास लगी है अगर पानी नहीं पीओगे तो बेचैन हो जाओगे। गर्मी में हम वैसे ही ज्यादा पानी पीते हैं। अगर तपिश लगती है तो ठण्डी हवा चाहिए। ऐसे ही जब हमारा मन तपन में आता है, चिन्ता में आता है, जब बेसहारा महसूस करता है उसको सहारा चाहिए। जब तक उसको सहारा नहीं है वह कहीं भी नही ठहरेगा।

जहाँ मैं गया था वहाँ आन्ध्रप्रदेश से पाँच पंडित आए हुए थे।

जिन्होंने मुझे गृह प्रवेश पर बुलाया था उन्होंने अपनी बिल्डिंग पर लगभग तीन करोड़ लगाया होगा। चार दिन वे पंडित जी हवन करते रहे। कलयुग में तो सीधी बात कह दी **कलि केवल एक नाम आधारा शब्द सिमरती सन्त मत सहारा।** सन्तमत का जमाना है। वो इस बात को मानते थे लेकिन रोटी का सवाल है।

तुम सहारा लेते हो लेकिन एक का लो। किसी संत का सहारा लेते हो तो भई! एक का लो। सहारा लेना भी चाहिए क्योंकि सहारे के बिना तुम डावाँडोल हो जाओगे। बच्चा जब गिरता है तो माँ का सहारा लेता है, बड़ा हो जाता है तो बाप का सहारा लेता है। जब मन बेचैन होता हो उस समय आपको सहारा लेना होगा, लेना भी चाहिए। सन्तमत में सबसे बड़ा सहारा गुरु का है। बाकी के सहारे तुम्हारी मनोकामनाएँ पूरी करेंगे। जहाँ तुम्हारी आस्था है वहाँ लगे रहो लेकिन यदि उस आस्था से कुछ और ज्यादा चाहते हो, क्या चाहते हो? तुम्हारी दुनिया भी बन जाये, तुम्हारा दिन भी बन जाये तो किसी सतपुरुष की संगत में जायें। तुम्हारी तपन शान्त हो जायेगी। सन्त तो कहते हैं- '**जब तू मेरा हो गया तो सब जग तेरा हो गया।**' यही बात भगवान् कृष्ण ने गीता में भी कही है कि '**तू बस मेरा हो जा, तेरे सारे काम मैं खुद करूँगा।**

नहिं खालिक़ मख़लूक न खिल्कत,
कर्त्ता कारन काज न दिक्कत।

जब तक आप जिन्दगी में कर्म करते-करते थक नहीं जाओगे तुम दुनिया से वैराग्य प्राप्त नहीं कर सकते। मुझे मेरे सद्गुरु ने अठारह वर्ष की आयु से कहीं से कहीं पहुँचा दिया। जब मैंने अभ्यास करके महाराज जी से

कहना कि आज मैंने यह देखा, वह देखा। तब महाराज जी कि चिट्ठी पहुँच गई कि बेटा अभ्यास बन्द कर दे सिर्फ सिमरन और ध्यान करना है क्योंकि वहाँ पहुंचने से दुनिया में वैराग्य प्राप्त हो जायेगा। अभी दुनिया बनानी है। तुम अभी आगे बढ़ो। मैंने बढ़िया पढ़ाई की तथा बढ़िया नौकरी की। इज्जत की नौकरी के बाद मैं रिटायर हुआ। किसकी कृपा से हुआ? गुरु की आज्ञा का पालन करने से हुआ। मैंने कहीं सिर नहीं झुकाया केवल एक ही जगह मेरा सिर झुका है। हमेशा एक ही जगह सिर झुकाओ तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी।

तुम जो भी कर्म करते हो चाहे पढ़ाई है, दुकानदारी है, नौकरी है, बिजनैस है, घर-गृहस्थ है, जो कुछ भी तुम दुनिया में करते हो अगर तुम्हारा दिल उसमें लग गया तो तुम्हारा दिल नाम जपने में लग जायेगा। अगर तुम्हें दुनिया में प्यार करना आ गया तो तुम गुरु से भी प्यार कर सकोगे। अगर तुम बाहर नफरत करते हो तो तुम अन्दर प्यार नहीं कर सकते। मैं तुम्हें यह प्रैक्टिकल जिन्दगी बता रहा हूँ, जीने का राज बता रहा हूँ। पहले बाहर कर्म करते-करते थक जाओ जैसे मैं पढ़ता-पढ़ता थक गया। मैं अब भी पढ़ता हूँ, लिखता हूँ। हमने बैठना नहीं है। प्रकृति भी अपना काम कर रही है। सूरज अपना काम कर रहा है। वायु अपना काम कर रही है जल अपना काम कर रहा है, पृथ्वी अपना काम कर रही है, आकाश अपना काम कर रहा है। पाँचों तत्त्व तुम्हारी सेवा में लगे हुए हैं। एक इन्सान ही है जो हिम्मत हार के बैठ जाता है।

अब बच्चे हैं वे ही मुझे खिलायें-पिलायें। महाराज जी कहा करते थे कि जो बूढ़े लोग हैं और कुछ नहीं तो अपने कपड़े फाड़ कर सी लिया

करो। यदि फ्री बैठोगे तो मन चंचल रहेगा। मन कभी इधर भागेगा, कभी उधर भागेगा। इसको काम में लगा कर रखो। ये ऐसी शक्ति है जो कर्म में विश्वास रखती है।

मन बहुत ताकतवर है। तुम्हारे अन्दर ताकतें भरी पड़ी हैं। शास्त्रों ने कह दिया कि तुम्हारे अन्दर सारे के सारे देवता हैं। शास्त्र कहते हैं- **जो ब्रह्मांडे सो ही पिंडे।** जो ब्रह्मांड में है वही तुम्हारे शरीर में है, फिर तुम अपने-आपको कैसे कमजोर समझते हो। यदि सूरज ऊपर है तो तुम्हारे अन्दर भी सूरज है। यदि चाँद ऊपर है तो तुम्हारे अन्दर भी चाँद है। यदि ऊपर तारे हैं तो तुम्हारे अन्दर भी तारे हैं। अगर बाहर आँधी आती है तो तुम्हारे अन्दर भी आँधी आती है। तुम्हें गुस्सा आँधी तुफान की तरह आया। ठंडी हवा आयी तो तुम्हें शान्ति मिलती है। तुम्हारे अन्दर ही सब कुछ है, तुम क्यों बाहर भटक रहे हो? तुम इस बात को भूल जाते हो। अरे! बात को भूलो नहीं, यह भूलने वाली बात नहीं है। यह ऐसा नुस्खा है जो जिन्दगी का साथ देता है।

गुरु की वाणी हमेशा साथ रहती है। गुरु की वाणी तुम्हारा कभी पीछा नहीं छोड़ेगी। जैसे मेरे दाता की वाणी सदैव मेरे साथ रहती है कभी मुझको छोड़ती नहीं है। इसलिए संत कहते हैं जब तक तुम थक नहीं जाओगे। अब सवाल यह उठता है कि आदमी थक कर कहाँ जाता है? मैंने सड़कों पर काम करने वालों को देखा है वे थक कर पत्थरों पर ही सो जाते हैं। ऐसे ही जो मन का काम करने वाले हैं, जो मन से थक जाते हैं तो मन से ख्याल आने बन्द हो जाते हैं। कबीर साहिब ने कहा कि **'मन तू थकत-थकत थक जा'। 'जब तू मेरा हो गया सब जग तेरा होय'।**

तुम्हें जितना नमक खाना है खाओ, चीनी खानी है आपको शुगर हो जायेगी। मैं कहता हूँ पहले ही इन चीजों से तौबा कर लो नहीं, तो डाक्टर के पास जाना पड़ेगा। सादा खाना खाओ, सादा रहो तुम्हारे ऊपर ईश्वर की कृपा बनी रहेगी। खाना खाने से पहले उस परमात्मा को जरूर याद करें। माँ के हाथ का खाना बना हुआ है, पत्नी के हाथ का खाना बना हुआ है, बेटी के हाथ का खाना बना हुआ है- वह पवित्र है, उसमें संस्कार हैं। कुछ लोग बाहर मुझे मिले जिनकी पत्नियों को मैंने यही कहा कि देखो बेटी तुम्हारे घर में सुख आ जायेगा उसके लिए तुम जब भी खाना बनाओ क्रोध को दरवाजे के बाहर छोड़कर ही खाना बनाओ। वह खाना अपने पति को भी खिलाओ, अपने बच्चों को भी खिलाओ। लेकिन हम खाना खाते समय भी कभी कुछ करते हैं, कभी कुछ करते हैं।

मैंने छोटे-छोटे बच्चों को देखा ऐनकें लगी हुई हैं। मैंने उन लोगों से पूछा क्या बात है ऐनकें क्यों लगी हुई हैं? मैंने कहा बच्चों पर थोड़ा रहम करो अपने घरों में टीवी का इस्तेमाल थोड़ा कम करो। यदि तीन कमरे हैं तो तीनों कमरों में बड़े-बड़े टीवी हैं। टीवी से हटे तो मोबाईल फोन हैं। कानों में इयर प्लग लगाए हुए हैं। मैंने कहा कि इनकी आँखें पचाल साल में ही जवाब दे जाएँगी। उनको पता ही नहीं कि दुनिया कहाँ हैं? ऐसे बच्चे मेरे देश का क्या कल्याण करेंगे। ये बच्चे जो देख रहे हैं, जो सुन रहे हैं इनका दिमाग इसी सर्कल में रहेगा। ये बच्चे इस सर्कल से बाहर नहीं आएँगें। इन बच्चों से कुछ भी पूछ लो कि पूर्णभक्त कौन था? प्रह्लाद कौन था? इनको कुछ नहीं पता क्योंकि इनको संस्कार ही नहीं मिला। अभी कुछ दिनों पहले मैं चण्डीगढ़ किसी के घर गया। उनका बेटा मोबाईल पर लगा हुआ

यदि उसकी माँ उससे फोन ले तो वह रो पड़े। मैंने उनसे कहा बेटा इसको मोबाईल की आदत हटा दो। वह बोली महाराज जी क्या करें यह तो रोने लग जाता है। मैंने कहा आप इस फोन से बैटरी निकाल लिया करो और इसके हाथ में दे दो। जब कुछ नहीं नजर आयेगा तो अपने-आप ही छोड़ देगा। मैं चाहता हूँ तुम्हारे बच्चों को संस्कार मिले।

इसलिए जब तक तुम दुनिया में थक नहीं जाओगे और थकने के बाद उधर आ जाओ। मुझे मेरे दाता ने बहुत थकाया। मैंने कभी सोचा नहीं था कि मैं राजस्थान जाऊँगा या कहीं और जाऊँगा। मैं गाड़ी में बैठने से पहले कहता हूँ वाह! बाबा तेरी मौज है। मैं नहीं थकता जब तक वो मेरे साथ है, जहाँ मर्जी ले चल मैं चलने को तैयार हूँ।

यदि तुम माँ-बाप की सेवा नहीं करोगे तो तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा। यदि माँ-बाप बच्चों के प्रति अपनी ड्यूटी पूरी नहीं करेंगे तो बच्चे काबिल नहीं बनेंगे। उनको अच्छे संस्कार दो:-

दृष्टा दृष्टि नहिं कुछ दरसत।
वाच लक्ष नहिं पद न पदारथ॥
ज़ात सिफ़ात न अब्बल आख़िर।
गुप्त न परगट बातिन ज़ाहिर॥

अब स्वामी जी महाराज बारहवें महीने की बात कर रहे हैं। देसी महीनों में ये जेठ महीना बारहवाँ महीना है। अंग्रेजी महीनों में तो दिसम्बर आता है। ज़िन्दगी का भी एक आखिरी महीना है, यह महीना है जब हम जिन्दगी का सफर पूरा कर लेंगे। वह होना ही है निश्चित है उसको कोई टाल नहीं सकता। महाराज जी फरमाया करते थे कोई बीस साल के लिए,

कोई पचास साल के लिए कोई सौ साल के लिए वह समय निश्चित है। हमें जो यह शरीर मिला कर्म करने के लिए मिला। यदि इससे कर्म करोगे तो आप इसके प्रति अपना धर्म पूरा नहीं कर रहे हो इसलिए- **'कर्म प्रधान विश्वकरखा।'** अच्छा करोगे, अच्छा पाओगे। बुरा करोगे बुरा पाओगे, कर्म प्रधान है। हमारे पंजाबी में कहावत है- **'उद्यम अगे लक्ष्मी' उद्यम का मतलब मेहनत। 'पंखे अगे पौन'।** यही बात अमेरिकन, यूरोपियन बाहर के लोग कहते हैं 'कर्म ही पूजा है' फिर हम कहाँ जाएँगे अरे! कर्म करोगे तो लक्ष्मी भी मिलेगी पैसा मिलेगा। यदि कर्म ही नहीं किया तो कुछ नहीं मिलेगा। हर कर्म का लेबल है- एक शारीरिक कर्म है। शारीरिक कर्म की सीमा है। शरीर इतना ज्यादा कर्म नहीं कर सकता। वह सिर्फ इतना कर सकता है जिससे हमारे पेट की पूजा हो सके, कपड़ा मिल सके, रोटी मिल सके, मकान मिल सके इससे ज्यादा शरीर की ताकत नहीं है। हमारे शरीर की सीमा है वह सीमा हमें स्थूल सुख दे सकती है। दूसरा है- मानसिक। मन का कर्म है ज्ञान को प्राप्त करना जैसे साईंटिस्ट कितनी बड़ी खोज करता है- बल्ब, पंखे, बिजली आदि-आदि खुद भी कमाई कर गया और हमें भी सुख दे गया। एक मन का कर्म भी है उससे तुम सूक्ष्म कर्म भी कर सकते हो। सूक्ष्म कर्म है- ज्ञान प्राप्त करना। मन से ज्ञान प्राप्त करके लोगों ने किताबें लिख दीं, मेडिकल साईंस में इतनी तरक्की कर ली। उनका दुनिया में नाम हो गया। शारीरिक कर्म करने से तुम्हें उसके लेबल का सुख मिल जायेगा। मन का कर्म करने से तुम्हें उसके लेबल का सुख मिल जायेगा। उससे भी आगे के कर्म को भक्ति कहते हैं, योग कहते हैं, मालिक की याद कहते हैं उससे ऐसा सुकुन मिलता है कि कुछ करने की

जरूरत ही नहीं है। उसमें है-

जो-जो माँगे सद्गुरु अपने से सोई-सोई देवे।

इसके लिए बड़ी कुर्बानी करनी पड़ती है। वहाँ मन नहीं है, मन की सीमा खत्म हो जाती है।

सद्गुरु पकड़ी बाँह नहीं तो मैं बह जाता।

फिर सद्गुरु बाजू पकड़ लेता है फिर तुम्हें कुछ पकड़ने की जरूरत नहीं है। वह ही decide करता है कि तुम्हें क्या करना है, क्या नहीं करना है। अब स्वामी जी कह रहे हैं- जहाँ हमने जाना है शारीरिक रूप से थककर, मानसिक रूप से थककर, आत्मिक रूप से थककर जब इन तीनों से थक जायेंगे। फिर कहाँ जाना है स्वामी जी उसका जिक्र कर रहे हैं। यह तुम्हारे लिए नहीं है यहाँ नौजवान बैठे हुए हैं मैं नौजवानों को कहना चाहता हूँ सफल होने होने के लिए दो काम करो, तुम्हें कभी कोई कमी नहीं रहेगी। तुम्हारे सारे काम भी हो जाएँगे और तुम कर्म करते-करते भी थक जाओगे। मालिके-ए-कुल एक शक्ति है जिसके अलग-अलग नाम रखे गए हैं किसी ने उसको GOD कह दिया, वाहेगुरु कह दिया, राम कह दिया। हर इन्सान उसको अपने-अपने ख्याल से बनाता है। उसका एक नाम रख लो जो रखना चाहते हो। राधास्वामी मत में स्वामी जी महाराज ने जब यह ज्ञान प्राप्त किया तो उसका नाम सतनाम रखा। गुरुनानक साहिब ने भी उसका नाम सतनाम रखा। कबीर साहिब ने भी उसका नाम सतनाम रखा। हमारे हजूर राय सालिगराम साहिब जो स्वामी जी महाराज के बहुत ही प्रिय शिष्य थे जैसे परमदयाल जी महाराज, दातादयाल जी महाराज के शिष्य थे। दाता दयाल जी महाराज हजूर राय

सालिगराम साहिब जी के शिष्य थे ऐसे ही हजुर राय सालिगराम स्वामी जी महाराज के प्रिय शिष्य थे। उन्होंने अपने अनुभव के अनुसार कहा जो मालिक है वह स्वामी है। जो स्वामी है वह हमारे अन्दर शब्द है और शब्द ने ही यह सारी दुनिया रची है और जो हमारे अन्दर शरीर, मन, आत्मा को चलायमान कर रहा है। जिसके सहारे मेरा हाथ हिल रहा है, जिसके सहारे मैं बोल रहा हूँ, देख रहा हूँ, सुन रहा हूँ उसका नाम उन्होंने सुरत रखा। आत्मा सुरत से नीचे है। इसीलिए उन्होंने कहा कि हमारा self राधा है और हमारा मालिक स्वामी है, उन्होंने इसका नाम 'राधास्वामी' रखा। राधा जो हमारी सुरत है उस मालिक से मिलना चाहती है तो उसको 'सुरत शब्द योग' करना चाहिए। सुरत को मन से बाहरमुखी नाम जपकर फिर अर्न्तमुखी जो ध्वनि पैदा होती है के साथ जुड़ना फिर अन्य शब्द को सुनना, का नाम है राधास्वामी। यही मेरे सद्गुरु परमदयाल जी महाराज ने मुझको बताया और उसी को मैं मानता हूँ कि यह नाम बहुत उच्चकोटि का नाम है।

उससे यह साबित होता है कि वो मुझसे बाहर है ही नहीं। राधा भी अन्दर है और शब्द भी अन्दर है। इसीलिए कह दिया-

मैं तो हूँ घट में तुम्हारे ढूँढ लो मुझको वहीं।

इसीलिए सन्तों ने कहा- ऐ इन्सान तू उस मालिक का एक नाम रख ले। इसीलिए मेरे दाता ने बड़ी ऊँची आवाज में कहा- ऐ सत्संगियो यदि तुम मुझे फकीर चन्द पुत्र श्री मस्तराम समझकर मेरी पूजा करोगे तो तुम कभी पार नहीं हो सकते। तुम पार होओगे मेरी वाणी पर चलकर मेरी पूजा करने से तुम पार नहीं हो सकते। उन्होंने यह कितनी ऊँची बात कही है। उनके गुरु महर्षि

शिवव्रतलाल जी ने कहा-

ढूँझ मुझको अपने मन में मैं तो तेरे पास हूँ।
घट में दर्शन पाओगे सन्देह इसमें कुछ नहीं।

तुम्हें बाहर कुछ नहीं मिलना। जब आँख बन्द करके उसको याद करेंगे कि वो मेरे घट में है तो दर्शन होंगे ही। जब तुम्हें विश्वास है कि वो अन्दर है तो दर्शन हो जाएँगे। इसके लिए सिमरन करना है, ध्यान करना है। सुबह उठकर नहाकर, मेरे दाता फरमाया करते थे कि एक जगह निश्चित कर लो। 'सुबह' संसार में एक दौलत होती है। उसको प्राप्त करने के लिए सुबह उठो फिर देखो तुम्हारे अन्दर क्या नहीं है। सारी दुनिया की खुबसूरती तुम्हारे अन्दर है। सारी दुनिया की खुशी तुम्हारे अन्दर है, धन-दौलत तुम्हारे अन्दर है मगर हम बाहर भटकते फिरते हैं-

घट में दर्शन पाओगे, संदेह कुछ इसमें नहीं।

तुम कुछ भी सन्देह नहीं कर सकते जैसा मैंने आपको अभी बताया। तुम किसी भी मन्दिर में जाते हो वहाँ मूर्ति को आँखें फाड़कर थोड़े देखते हो। मूर्त्ति के सामने आँखें बन्द हो जाती हैं। मूर्त्ति कहती है अरे! मुझको क्या देखता है मैं तो तेरे अन्दर ही हूँ। यही दाता दयाल कह रहे हैं-

मैं तो घट में हूँ तुम्हारे, ढूँढ लो मुझको वहीं।

उस परमतत्त्व को कहाँ ढूढँना है ? उस मालिक-ए-कुल की अंश आप सबमें है। मैंने वैसाखी पर भी यही कहा था। मैं बाहर भी यही शोर मचा कर आया हूँ। हममें दो बातें अलग-अलग है। शारीरिक रूप से- मेरा और आप सबका शरीर अलग-अलग है। मानसिक रूप से- हम मन के रूप से अलग-अलग हैं लेकिन आत्मा और सुरत रूप में हममें कोई

फर्क नहीं है। तुम सब में प्रकाश रूपी आत्मा विराजमान है। गुरुवाणी कहती है–

मन तू जोत स्वरूप है, अपना रूप पहिचान।

सबमें एक ही आत्मा है, एक ही प्रकाश है। इनके ऊपर इनको कंट्रोल करने वाली हस्ती एक और है– सुरत वह सुरत तुम्हारे अन्दर है वह मालिक–ए–कुल की अंश है। जिस दिन तुम्हें उसके दर्शन हो गए तुम मालिक के दर्शन कर लोगे उसको मिलने का एक ही रास्ता है–

शब्द सुनते हो मेरा, अन्तर में चित्त को साध कर।
सुरत मेरा रूप है, इसको समझ लेना यहीं॥

अब दाता दयाल जी महाराज कह रहे हैं कि सुरत मेरा रूप है। गुरु मालिक–ए–कुल होता है इसलिए अगर उसका रूप देखना है तो वह हमारे अन्दर प्रकाश से ऊपर है और वह है हमारी सुरत। दुनिया का सुख प्राप्त करने के लिए आप उसका एक नाम रख लो चाहे कोई भी– रख लो। मेरे लिए उसका नाम राधास्वामी है, मैं उसी का सिमरन करता हूँ। मैंने उसको मेरे बाबा फकीर में माना। वह शरीर नहीं है, वह प्रकाश और शब्द का एक भण्डार है। जिसकी कोई सीमा नहीं है वो मेरा गुरु है वो मुझे बता गए कि मेरे शरीर के साथ कब तक जुड़ा रहेगा। उन्होंने मुझे अपना रूप दिखा दिया है, वह रूप है शब्द और प्रकाश। जो उसके साथ जुड़ जाता है वो उसी का हो जाता है। तुम जिन्दगी में सुख प्राप्त करने के लिए क्या करो– **एक नाम जपो और दूसरा उसका एक रूप मान लो।** मेरे गुरु ने एक गुत्थी को खोल दिया किसी को बाँधा नहीं, अपने पीछे नहीं लगाया। तुम जिसको भी मानते हो उस एक को मानो और उसका एक नाम रखकर उसका सिमरन करो उसी के नाम पर सब काम करो। उसी के नाम पर

खाओ, उसी के नाम पर पीयो, उसी के नाम पर सोओ और उसी के नाम पर जागो। उसी नाम पर चलो और उसी के नाम पर वापिस आओ। तुम्हारी जिन्दगी में एक रौनक आ जायेगी, एक नया फूल खिल जायेगा।

तुम्हारी जिन्दगी के दुख दूर होते जाएँगे बस भटकना नहीं है, घबराना नहीं है। तुम एक कदम उसकी तरफ चलोगे वह दस कदम तुम्हारी तरफ आयेगा। जिन्दगी की तपिश से बचने के लिए बस उसकी शरण में आ जाओ। तुम्हारे सभी काम अपने–आप होते जाएँगे।

सूक्ष्म हूँ स्थूल हूँ, कारन हूँ कारन से परे।
देख दृष्टि को जमाकर, अपने अन्तर में कहीं॥
घट में दर्शन पाओगे, संदेह कुछ इसमें वहीं ।
चाह जब दरशन की होगी, देख लोग आप तुम।
जागते में सोते में, संध्या में मैं हूँ सब कहीं॥
घट में दर्शन पाओगे, संदेह कुछ इसमें नहीं।
राधास्वामी धाम में, सेवक हूँ राधास्वामी का।
मेल मेला राम में, इसकी परख आई नहीं॥
घट में दर्शन पाओगे, संदेह कुछ इसमें नहीं।

मैंने बहुत कुछ आप लोगों को कह दिया। मालिक आपको तन्दुरुस्ती दे, मन को शान्ति दे। घरों में शान्ति रखना तुम्हारे अपने बस में है। अच्छे ख्याल रखो, पोजिटिव ख्याल रखो। सबका भला चाहो तुम्हारा भला हो जायेगा। मैं सच्चे दिल से चाहता हूँ आप सभी सुखी हो जाओ। जिस इच्छा को लेकर आते हो मेरा सद्गुरु आपकी इच्छा पूरी करे।

सबको राधास्वामी!

डा. मोहन लाल विश्वकर्मा, अध्यक्ष, राधास्वामी जनरल ट्रस्ट, गोपी गंज (भदोई) से प्राप्त हुए पत्र दिनांक 2.8.19 की प्रतिलिपि सत्संगी भाई-बहनों की सूचना हेतु प्रस्तुत की जा रही है-

परम पूज्यनीय

परम संत हूजूर श्री दयाल कमल जी महराज

(फकीरमय)

" विनम्र निवेदन है कि **महर्षि शिवब्रतलाल जी वर्मन** के शिव समाधि तपस्थली पर वार्षिक महापर्व **महाशिवरात्रि** का परम पावन पर्व पर दिनांक **21 फरवरी 2020 दिन शुक्रवार** को दाता दयाल ट्रस्ट कमेटी द्वारा आपको इस महापर्व पर समस्त आचार्यगण सहित सादर आमंत्रित किया जाता है।

अतः हूजूर दयाल कमल जी महराज से समूचा शिव समाधि महर्षि जी की राधास्वामी संगत करवद्ध प्रार्थना करता है कि दाता दयाल के महापर्व पर पधार कर अमृतमयी सत्संत एवं दर्शन देने की महति दया करें। जिसके लिए शिव समाधि राधास्वामी संगत सदैव आभारी रहेगा।

तेरा दर्शन पाने को जी चाहता है, खुदी को मिटाने को जी चाहता है।
पिला दे ओ साकी राधास्वामी नाम की, मस्ती तेरा पाने को जी चाहता है।।

जब अपने ही दिल में खुदाई है तो काबे में सजदा कौन करेगा।
तेरा सत्संग दर्शन पाने को जी चाहता है।। "

राणा रणवीर सिंह,
सचिव

आभार प्रकट

निम्नलिखित सज्जनों ने मानवता मन्दिर होशियारपुर में सहयोग राशि दी है। परमपूज्य परमदयाल जी की परमकृपा इन सज्जनों व इनके परिवारों पर सदैव बनी रहे। ट्रस्ट इनके प्रति अपना आभार प्रकट करता है। -सचिव

S.No.	DONOR	Amount
1.	H.H. Dayal Kamal Ji Maharaj	5100/-
2.	Madan Singh/Manjeet Singh, USA	50000/-
3.	Smt. Sandhya Sharma Ji, Hoshiarpur	40000/-
4.	Subhash Chander Chadha, Hoshiarpur	15100/-
5.	Late Sh. Nand Sihra's Family, Canada	11000/-
6.	Jagjit Awagthi, USA	10500/-
7.	Arun Awasthi, USA	10500/-
8.	Arjun Singh Rathore, New Delhi	7511/-
9.	Dasondha Singh, UK	5100/-
10.	Praveen, Ramprasth	5100/-
11.	Neelkamal, USA	4350/-
12.	Neha Chopra, Khanna	4300/-
13.	Golu Ram, Sheikhupur	5100/-
14.	Agam Kumari Sharma	3100/-
15.	Deepak, Jammu	2500/-
16.	Dayal Singh, Jhawan	2100/-
17.	Gurdev Singh, Mumbai	2100/-
18.	Ashok Khetrapal, Nahoni	2100/-
19.	Gurmail Singh/Sarabjit Kaur, Tanda	2100/-
20.	G.S. Raghav, Hoshiarpur	2100/-
21.	Gurdev Singh, Jhawan	2100/-
22.	Sukhsham Chopra, Hoshiarpur	2001/-
23.	Kamlesh Tyagi, Noida	2050/-
24.	R.A. Hiremath, Belagavi	2000/-
25.	Mohan Singh, Bhopal	2000/-

26.	Ram Kanwar Hooda, Rohtak	2000/-
27.	Mohan Lal Bagga, Hoshiarpur	2000/-
28.	Hardyal Singh, Kathyari	1500/-
29.	Narinder Tyagi, Noida	1200/-
30.	Ach. Kuldeep Sharma Ji, Batala	2200/-
31.	Pankaj Munjal, Hoshiarpur	1100/-
32.	Reetu Kanwar, Khatu Sham	1100/-
33.	Yamuna Devi, Hoshiarpur	1100/-
34.	Kavita Muthanna, Bengaluru	1100/-
35.	Sardar Studio, Adampur Doaba	1100/-
36.	Nanak Chand, Nimhol	1100/-
37.	Giri Raj, Delhi	1100/-
38.	Pappu, Sheikhupur	1100/-
39.	Amar Chand Jakhar, Agroha	1100/-
40.	Alka Tyagi, Noida	1100/-
41.	Praveen Kulshreshtha, Agra	1100/-
42.	Ashish, Kangra	1100/-
43.	Harvarinder Singh, Ludhiana	1100/-
44.	R.S. Pathania, Nagrota Bagwan	1100/-
45.	Aruna Prabhakar, Canada	1001/-
46.	B.S. Sharma, Sihor Pain	1000/-
47.	Raghuwar Dayal & Sons, Amritsar	1000/-
48.	Narinder, Meerut	1000/-
49.	Nanad Singh, Harchowal	1000/-
50.	Ravinder / Jaideep, Sonipat	1000/-
51.	Surinder Jaswal, Bhaddal	1000/-
52.	Bindu Rani, Hoshiarpur	1000/-
53.	Ishwar Chaudhan, Pathihar	1000/-
54.	Ganesh C. Kaushal, Adampur Doaba	1300/-
55.	Rakesh Sharma, Hoshiarpur	600/-
56.	Mithilesh Kulshreshtha, Agra	502/-
57.	Gopi Chand, Alwar	501/-
58.	Anjana Kashyap, Naya Mangal	501/-
59.	Ravi Jaswal, Una	500/-
60.	Prem Rajasthan	500/-
61.	Ashwani Bhatnagar	501/-

62.	Adhiraj Singh, Phagwara	500/-
63.	Champa Devi, Burdwan	500/-
64.	Shakti Chand, Sharma	500/-
65.	Kalu Ram, Sheikhupur	500/-
66.	Shubh Deep, Johal	500/-
67.	Surinder Kaur, Lajowal	500/-
68.	Ravinder Singh, Rohtak	500/-
69.	Gokul Chand, Mohindergarh	500/-
70.	Ram Niwas Tanawr, Mohindergarh	500/-
71.	Amin Lal, Sheikhupur	500/-
72.	Om Parkash, Hissar	500/-
73.	Madan Lal, Sabherwal	500/-
74.	Ishwar-Hissar	500/-
75.	Vinod Kumar, Jalandhar	500/-
76.	Archna Tyagi, Noida	500/-
77.	Suraksha Devi, Naviana	500/-
78.	Bharat Bhushan, Jagdhari	500/-
79.	Sanjay Kumar, Nagrota Bagwan	500/-
80.	Amar Chand, Kangra	500/-
81.	Ram Bachan, Afsanpur	500/-
82.	Tara Chand Mittal, Gurgaon	500/-
83.	Puran Chand, Nimhol	500/-
84.	P.D. Sharma, Manjra	500/-
85.	Neelam, Hoshiarpur	500/-
86.	Vidya Sagar, Hoshiarpur	500/-
87.	Vidya Khurana Alwar	500/-
88.	H.K. Matto, Jammu	500/-
89.	M. Khushi, Jammu	500/-
90.	Anil Aima, Jammu	500/-
91.	Karan Thakur, Mubarakpur	500/-
92.	Smriti Chauhan, Khunyara	500/-
93.	Amit Thakur, Andora	500/-
94.	S.K. Sethi, Jalandhar	500/-